दिसम्बर 2003
Rs. 10 /-
चन्दामामा

PARLE
चुप्पक्क चक्क
चे...नकचक्क
चिश्श ट्वीश नक?
गोली
मस्त
बोली
mango bite
mango
bite
अपने मुंह में रखिए मैंगोबाइट की एक गोली,
और शुरू कीजिए बोलना मैंगोबाइट की बोली.

दो वर्षों से आपको ज्ञान और आनन्द
देती आ रही पौराणिक गाथा
विघ्नेश्वर
इस अंक के साथ समाप्त हो गई।
अगले अंक से रसीली कथावस्तु
तथा मनोहर चित्रों से भरपूर
सबको मंत्रमुग्ध कर देनेवाली
पौराणिक धारावाहिक
विष्णु पुराण
का प्रारंभ होगा।
अपनी प्रति (जनवरी २००४)
आज ही सुरक्षित कर लीजिए।

चन्दामामा

सम्पुट - १०७ दिसम्बर - २००३ सञ्चिका - १२

विशेष आकर्षण

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division

CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट
या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

खेल प्रायोजक

भारत ने सन् १९५१ में प्रथम एशियाई खेलों का आयोजन किया था; आठवाँ एशियाई खेल भी सन् १९८२ में भारत में ही आयोजित किया गया। इस स्तम्भ के लिखते समय पहली बार आयोजित अफ्रीकी-एशियाई खेलों का अभी-अभी समापन हैदराबाद में हुआ है। दो विशाल महादेशों के राष्ट्र इस तरह एक-दूसरे के निकट आये हैं जो उन सब के लिए मंगल-सूचक है।

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इस प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय अवसरों पर भारतीयों के प्रदर्शनों ने, जनता को, खास कर युवा वर्ग को, खेलों में और अधिक रुचि लेने के लिए तथा खेलों व खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अलग से निधि निश्चित करने के लिए सरकारों को, प्रेरित किया है। बहुराष्ट्रीय प्रतिष्ठानों को खिलाड़ियों तथा खेल की घटनाओं को प्रायोजित कर अपने उत्पादनों तथा सेवाओं को बढ़ाने का, खेलों में एक सरल माध्यम मिल गया है।

जहाँ एक ओर इन प्रवृत्तियों को देखकर प्रसन्नता होनी चाहिए, वहीं दूसरी ओर, ऐसी उमंगों और चेष्टाओं के दूसरे भद्दे पहलू पर भी ध्यान देने की ज़रूरत है। यह स्पष्ट है कि बड़े-बड़े व्यापारी खास प्रकार के खेलों का ही चुनाव करते हैं। वे लोकप्रिय खेलों पर टूट पड़ते हैं, जिनसे उन्हें अधिक सफलता मिलने का विश्वास रहता है, इसलिए वे इस स्वस्थ गतिविधि के सर्वांग विकास की अधिक परवाह नहीं करते।

खेल-कूद न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए बल्कि राष्ट्र के स्वास्थ्य के लिए भी उत्तम है। पैसे का उपयोग बुद्धिमतापूर्वक किया जाना चाहिये जिससे भारत में अधिक से अधिक खिलाड़ियों को अधिक से अधिक लाभ मिल सके। तभी अपेक्षाकृत कम लोकप्रिय खेलों के खिलाड़ियों को आगामी २००४ के ओलम्पिक खेलों में अपनी सामर्थ्य सिद्ध करने का मौका मिल सकेगा।

सम्पादक : *विश्वम*

Visit us at : http://www.chandamama.org

दृष्टि दोष

पुराने ज़माने में क़ातिलों और लुटेरों को ही नहीं, छोटी-मोटी चोरियाँ करनेवालों को भी कड़ी सज़ा दी जाती थी। उनके गले में काठ बाँध दिया जाता था और धूप में बिठा दिया जाता था।

रतन नामक एक आदमी ने गाँव के बाहर चरते हुए एक बैल को पकड़ लिया, उसके गले में रस्सी बाँध दी और ले जाने लगा। एक चरवाहे ने यह चोरी देख ली और ग्रामाधिकारी को इसकी सूचना दी। ग्रामाधिकारी ने नौकरों को भेजकर रतन को गिरफ्तार कराया। उसके गले में काठ बंधवा दिया और सूर्यास्त तक कड़ी धूप में उसे बैठे रहने की सज़ा सुनायी।

थोड़ी देर बाद रतन के गाँव के किशन ने जब यह दृश्य देखा तो उसने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, ''यह क्या है? तुम्हारे गले में यह काठ क्यों बाँधा गया?''

''क्या बताऊँ। यह मेरी बदनसीबी है।'' रतन ने कहा। किशन ने पूछा, ''साफ़-साफ़ बताओ, ऐसा क्यों हुआ?''

''गाँव से निकल रहा था। हरे-भरे खेत के पास बड़ी रस्सी मिल गयी। बस, ले ली। मुझसे कोई बड़ा जुर्म नहीं हुआ।'' रतन ने कहा।

''रास्ते में मिली रस्सी ले लेने पर इतनी बड़ी सज़ा?'' किशन ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा।

''इस रस्सी के पीछे कम से कम पाँच-छः सौ रुपयों की क़ीमत का एक बैल है। दृष्टि दोष के कारण मैं यह देख नहीं पाया।'' रतन ने दीन स्वर में कहा।

– *मनोहर*

संजीव की विद्याएँ

गंगापुर गाँव का निवासी संजीव का जन्म किसान परिवार में हुआ। वह खेतों पर काम करता था, पर पंडितों की सहायता से उसने शास्त्रों में भी शिक्षा पायी। कविता-पाठ में, गीत गाने में व चित्रण कला में भी उसे अभिरुचि थी। पिता धर्मराज ने उससे कहा, ''किसी एक काम पर अपना ध्यान केंद्रित करो। सब सीख चुकने के बाद भी किसी एक विषय में दक्षता न हो तो भविष्य में तुम्हारा जीवन कष्टमय हो जायेगा, जीना दूभर हो जायेगा।'' यों अक़्सर वह अपने बेटे को सावधान करता था।

पर संजीव अपने पिता की बातों को अनसुनी करते हुए कहा करता था, ''पिताजी, ज़माना बदल गया। आज के दिनों में सुखी जीवन बिताना हो तो पहले की तरह मात्र किसी एक विद्या को सीखना पर्याप्त नहीं है। मैं और अनेक विद्याएँ सीखूँगा।''

धर्मराज दस एकड़ जमीन का मालिक था। पहले वह दो एकड़ का ही किसान था। पर उसने कृषि पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया और खूब कमाया। उसके पिता ने जो कर्ज़ लिये थे, उन्हें चुकाया और मुश्किलों में अपने भाई की सहायता भी की। दो बहनों की शादी भी करवायी। हाल ही में बड़े धूमधाम के साथ पुत्री का भी विवाह करवाया। इतना सब कुछ हासिल करने के बाद भी वह अपने बेटे को लेकर चिंताग्रस्त रहता था, क्योंकि संजीव गाँव छोड़कर शहर में जाकर बसना चाहता था। कोई कुछ कहे, उसके पहले ही वह अपने बारे में लंबे-लंबे भाषण देने लगता था। यह उसकी आदत सी हो गयी थी।

''अपने बारे में कहते रहने की आदत छोड़ो। पहले दूसरों के बारे में जानने की कोशिश करो। इनमें उपयोगी कोई बात हो तो सीखो। ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारा उद्धार नहीं होगा। जहाँ

- मुरलीधर -

हो,वहीं पड़े रहोगे।'' यों धर्मराज अक़्सर उसे सावधान करता था।

एक दिन संजीव का मामा सीताराम उनके घर आया। उसने ज़ोर देकर कहा कि संजीव ही उसकी बेटी के लिए योग्य वर साबित होगा। धर्मराज को यह रिश्ता पसंद था, पर संजीव ने कहा, ''मैं अनेक विद्याओं में प्रवीण हूँ। जिस लड़की से मैं विवाह करूँगा, उनमें से आधी विद्याओं में इस कन्या का भी पारंगत होना आवश्यक है। आपकी पुत्री राधा मुझसे विवाह करना चाहती हो तो उसे अनेक प्रकार ,की विद्याओं में शिक्षित होना पड़ेगा।''

''मैं तो नहीं जानता कि किन विद्याओं में तुम पारंगत हो। तुम्हारी ख्याति मैंने कहीं भी नहीं सुनी। यह भी नहीं जानता कि इन विद्याओं से तुम्हें क्या लाभ पहुँचा है। इन विद्याओं को उपयोग में लाओ, किसी राजा के दरबार में नौकरी करो। तब जाकर वे विद्याएँ राधा सीखेगी,'' सीताराम ने कहा।

संजीव के लिए यह एक चुनौती थी। वह तुरंत राजधानी गया। वहाँ पहुँचने के बाद एक धर्मसराय में रहने लगा। वहाँ उसका परिचय घनी मूँछवाले अधेड उम्र के एक व्यक्ति से हुआ। संजीव ने अपनी सभी विशिष्टताओं के बारे में उसे बताया और कहा, ''राजा के दरबार में नौकरी पाने आया हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि नौकरी मुझे मिलेगी। पर इस निर्णय पर नहीं आ पा रहा हूँ कि वेतन कितना मांगूँ?''

अधेड़ उम्र के उस व्यक्ति ने कहा, ''तुम्हारे दिये विवरणों से यह स्पष्ट है कि तुम्हें कई विद्याएँ आती हैं, लेकिन राजा के दरबार में ऐसी विद्याओं के लिए कोई स्थान नहीं है। तुम अगर खड्ग युद्ध जानते हो तो दरबार में तुम्हें नौकरी मिल सकती है।''

''खड्ग युद्ध? हाँ, थोड़ा-बहुत जानता हूँ। पर उसमें दक्ष हाने के लिए गुरु की ज़रूरत है। क्या यहाँ कोई गुरु है, जो मुझे इसकी शिक्षा दे सके?'' संजीव ने पूछा।

''यहाँ वीरवर नामक एक गुरु हैं। खड्ग विद्या में उनसे बढ़कर यहाँ कोई और गुरु नहीं हैं। समर्थ लोगों को वे निःशुल्क प्रशिक्षण देते हैं।'' अधेड़ उम्र के उस व्यक्ति ने कहा।

दूसरे ही दिन संजीव, वीरवर के घर गया

और व्यय की देखरेख के लिए एक योग्य व्यक्ति की ज़रूरत है। वहाँ कोशिश करो। पर कोषागार की पद्धतियाँ ही कुछ अलग होती हैं। तुम्हें यह नौकरी पानी हो तो पहले गणितज्ञ भास्कर से मिलो। वे तुम्हें सुगम मार्ग सिखा सकेंगे।''

संजीव दूसरे दिन भास्कर से मिला और उनसे आवश्यक शिक्षा पाकर हफ़्ते भर में कोषागार की पद्धतियों को बहुत ही अच्छी तरह से सीख लिया। परंतु, तीन दिन पहले ही एक सुयोग्य युवक की नियुक्ति कोषागार में हो गयी। फिर भी संजीव निराश नहीं हुआ। उसने उस अधेड़ उम्र के व्यक्ति से पूछा कि क्या राज दरबार में कोई और नौकरी मिल सकती है?

''हर हफ़्ते नयी विद्या सीखते हो और काफ़ी मेहनत भी कर रहे हो। क्या इससे तुम्हें थकावट नहीं होती? उस व्यक्ति ने पूछा।

''मैं विद्या का प्यासा हूँ। विद्याभ्यास के लिए मेहनत करते हुए मुझे थकावट महसूस नहीं होती।'' संजीव ने गर्व-भरे स्वर में कहा।

''अपने मामा की चुनौती का उत्तर देने यहाँ आये हो और एक महीना भी गुज़र गया। आज तक तुम राजा के दरबार में नौकरी नहीं पा सके। अच्छा इसी में है कि तुम शिवगंगापुर लौट जाओ और अपनी हार मान लो। खेती के काम में अपने पिता की मदद करो।'' उस व्यक्ति ने सलाह दी। संजीव ने अनिच्छापूर्वक कहा, ''मैंने मामा की जो चुनौती स्वीकार की, हो सकता है उसमें मेरी हार हुई हो, परंतु कदापि उनकी राय को

और आने की वजह बतायी। उसने संजीव को ग़ौर से देखा और कहा, ''तुम चुस्त लगते हो, फुर्तीले दिखते हो। अपना ध्यान केंद्रित करोगे तो हफ्ते भर में खड्ग विद्या में प्रवीण बन सकते हो।'' यों कहकर उसे अपना शिष्य बना लिया।

हफ़्ते भर में ही संजीव ने खड्ग विद्या सीख ली और गुरु ने उसकी भरपूर प्रशंसा की।

एक हफ़्ता के बाद उसी सराय में अधेड़ उम्र के व्यक्ति से उसकी मुलाक़ात हुई। उसने उस व्यक्ति को बताया कि कल ही राजदरबार में नौकरी पर लगनेवाला हूँ।

इस पर उस व्यक्ति ने कहा, ''बहुत अनिष्ट हो गया। कल ही एक युवक ने अपनी खड्ग विद्या प्रदर्शित करके राजा के दरबार में नौकरी पा ली। परंतु, राजा के कोषागार में आमदनी

सच नहीं होने दूँगा कि जो विद्याएँ मैंने सीखीं, वे सबके सब निरर्थक हैं। किसी न किसी दिन राजा के दरबार में नौकरी पाकर ही रहूँगा।''

''राजा के दरबार में नौकरी पाने के लिए तुम्हारी विद्याएँ अपर्याप्त हैं।'' अधेड़ उम्र के उस व्यक्ति ने कहा।

''तो आपको भी मैं चुनौती दे रहा हूँ। राजा के दरबार में मैं अगर नौकरी पा लूँ तो आप मुझे क्या देंगे?'' संजीव ने पूछा।

''राजा के दरबार की नौकरी के विषय में तुम जो चुनौती मुझे दे रहे हो, उसमें तुम सफल नहीं हो पाओगे।'' उस व्यक्ति ने कहा।

''इतने विश्वास के साथ आप कैसे कह सकते हैं?'' संजीव ने पूछा।

''मैं ही राजा हूँ, इसलिए इतने विश्वास के साथ कह रहा हूँ,'' उस व्यक्ति ने कहा।

पहले तो कुछ क्षणों तक वह स्तब्ध रह गया, उसका चेहरा फीका पड़ गया, पर जल्दी ही उसने अपने आपको संभाला और राजा के पैरों को स्पर्श कर प्रणाम किया।

राजा ने बड़े ही प्यार से उसे उठाते हुए कहा, ''सचमुच ही तुम मेरा आदर कर रहे हो तो मेरा कहना मानो और अपने गाँव लौट जाओ।''

''प्रभु, आपने हर तरह से मेरी परीक्षा ली। तो फिर अपने दरबार में नौकरी देने में आपको क्या आपत्ति है?'' संजीव ने दीन स्वर में पूछा।

उसके इस सवाल पर राजा ने हँसते हुए कहा, ''तुममें घमंड आवश्यकता से अधिक है। तुम्हारा समझना है कि मैं तुम सभी विद्याएँ जानते हो। पर किसी भी विद्या में तुम परिपूर्ण नहीं हो। हर बार यह साबित हो चुका है कि राज दरबार में नौकरी पाने के लिए तुम्हारी योग्यता पर्याप्त नहीं है। पर तुमने इसके बारे में गहराई से कभी भी सोचा नहीं।''

संजीव को इन बातों से थोड़ा-सा धक्का लगा, फिर भी उसने कहा, ''प्रभु, आप तो मानते हैं कि किसी भी विद्या में बहुत ही शीघ्र मैं प्रवीणता हासिल कर सकता हूँ। है न?''

''आख़िर प्रवीणता कितनी मात्रा में? क्या राजा के दरबार में नौकरी पाने के लिए आवश्यक मात्रा में विद्या प्राप्त करने का प्रयास किया?'' राजा ने कहा।

राजा की बातों पर संजीव और दुखी होते

हुए बोला, ''अब मैं अपनी कमी समझ गया हूँ। जिस विद्या को जितनी आवश्यक मात्रा में सीखने के लिए आपने ज़ोर दिया है, उसी पर अपना ध्यान केंद्रित करूँगा। कृपया अपने दरबार में मुझे नौकरी दिलाइयेगा।''

''पहले से ही ऐसा सोचते, तो अवश्य ही दरबार में तुम्हें नौकरी दिलाता। विद्याओं में प्रवीणता पाने में तुमने जो देरी की, उसी की वजह से मैंने अपनी राय व्यक्त की। यह सब कुछ जो हुआ, वह तुम्हारे दुर्भाग्य की वजह से हुआ।'' राजा ने कहा।

''परंतु मेरा मानना है कि आपसे विनती करने के विषय में मैंने कोई देरी नहीं की। जैसे ही मालूम हुआ कि आप महाराज हैं, मैंने नौकरी माँगी।'' संजीव ने कहा।

राजा ने कहा, ''एक महीने पहले ही हम लोग मिल चुके हैं। समय-समय पर मैं तुम्हें राज दरबार की नौकरियों के विषय में समाचार देता रहा। पर तुमने कभी भी सोचा नहीं कि मैं कौन हूँ और मैं ये सारी बातें कैसे जानता हूँ। जानते हो, इसका क्या कारण है? तुम सदा अपने ही बारे में सोचते रहते हो। मेरे बारे में क्षण भर के लिए ही सही, सोचते तो मुझे पहचानने में देरी नहीं होती। दूसरे व्यक्ति के बारे में जानने में जो देरी करता है, उसके लिए राज दरबार में कोई स्थान नहीं।''

ये बातें सुनकर शर्म के मारे संजीव ने सिर झुका लिया। राजा के कहे मुताबिक वह शिवगंगापुर लौट गया और पिता से कृषि संबंधी कार्य सीखे और उन कामों में जी-जान से लग गया। फिर राधा से शादी की और सुखपूर्वक जीवन बिताने लगा। अपनी सीखी विद्याओं की विशिष्टताओं को उस गाँव के युवकों को सिखाने लगा। वे युवक कहने लगे, अगर राजा के दरबार में तुम्हें नौकरी मिल जाती तो हमारे लिए वह भारी नुक़सान साबित होता। भला हम ये विद्याएँ कैसे सीख पाते? अच्छा हुआ, तुम गाँव लौट आये।''

इस बात पर संजीव को बेहद खुशी हुई कि उसकी विद्याएँ व्यर्थ नहीं हुईं। साथ ही अपनी विद्याओं की महानताओं के बारे में बढ़ा चढ़ाकर बताते रहने की आदत भी उससे छूट गयी।
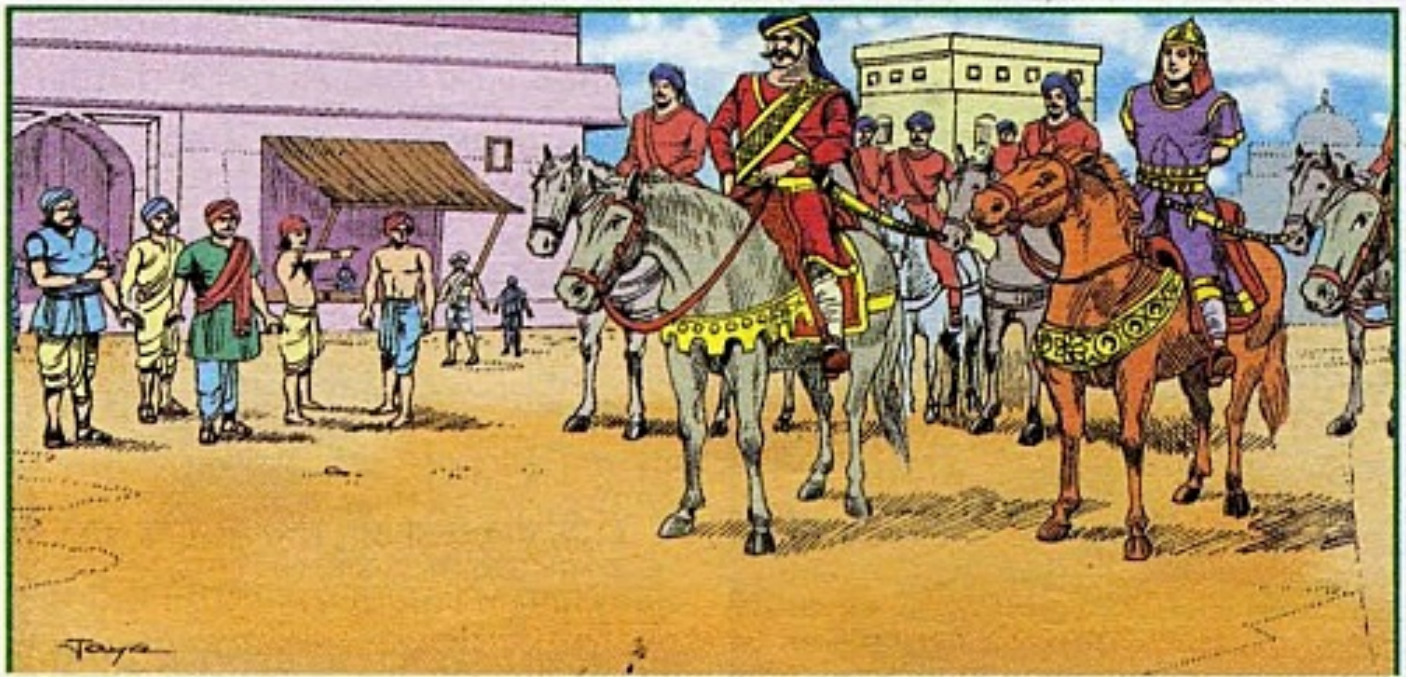
भल्लूक मांत्रिक

2

(कालीवर्मा नामक क्षत्रिय युवक नौकरी की खोज में जाता है। रास्ते में उसे गाँववालों ने लुटेरों का समाचार सुनाया । कालीवर्मा ने गाँव के युवकों की मदद से लुटेरों का दमन किया। इसके बाद वह नगर के समीप पहुँच रहा था, तभी राजा जितकेतु के अश्वदल ने उस पर हमला करके उसे बन्दी बना लिया। उसके बाद...)

चन्द्रशिला नगर के घुड़ सवार काली वर्मा को साथ ले नगर में पहुँचे। अनेक सैनिक एक व्यक्ति को घोड़े से बांधकर ले जा रहे थे। कुछ लोगों ने अश्वदल के नेता से पूछा कि घोड़े से बंधा हुआ व्यक्ति कौन है? इस पर अश्वदल के नेता ने विजय के अभिमान में आकर कहा, ''ओह, यह बंदी? इसका नाम तो कालीवर्मा है। यह हमारे राज्य के लिए ही नहीं, बल्कि पड़ोसी देश उदयगिरि के राजा दुर्मुख का भी प्रबल शत्रु है। जंगल में इसे बन्दी बनाने के लिए हमने जो यातनाएँ झेलीं, वे वर्णन के बाहर हैं।''

चन्द्रशिला तथा उदयगिरि दोनों राज्यों के शत्रु बने कालीवर्मा का वृत्तांत सुनने के ख्याल से कुछ लोग अश्वदल के पीछे राजमहल की ओर चल पड़े। अश्वदल का नेता राजमहल के अहाते में अपने अनुचरों को रोक राजमहल के भीतर पहुँचा और एक सिपाही के द्वारा राजा जितकेतु के पास यह ख़बर भेज दी कि उसने

है? वरना हमें राजा दुर्मुख के द्वारा नयी विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा !'' मंत्री ने सुझाया।

''हमारे अश्वदल के नेता ने ख़बर भेजी है कि राजद्रोही कालीवर्मा ही बन्दी बनाया गया है।'' राजा जितकेतु ने कहा।

''कालीवर्मा नाम के कई लोग हो सकते हैं। इसलिए आप स्वयं जाकर उसकी सुनवाई करके तब दण्ड दीजिए !'' मंत्री ने सलाह दी।

इसके बाद राजा और मंत्री महल के बाहर के अहाते में पहुँचे। अहाते में जनता की भारी भीड़ लगी हुई थी। उस भीड़ को देख राजा और मंत्री आश्चर्य में आ गये। इसके बाद मंत्री का आदेश पाकर अश्वारोहियों ने कालीवर्मा को बन्धन मुक्त किया और उसे घोड़े पर से उतार दिया।

कालीवर्मा घोड़े से उतरकर निर्भयतापूर्वक राजा और मंत्री की ओर नज़र दौड़ाकर बोला, ''महाराज ! आप के सैनिकों ने जंगल में अचानक मुझ पर हमला करके बन्दी बना लिया। आप उन्हें उचित दण्ड दीजिए !''

ये बातें सुन राजा जितकेतु विस्मय में आ गये और बोले, ''मेरे दस साल के शासन में किसी अपराधी ने ऐसी धृष्टतापूर्ण बातें नहीं की हैं?''

इस पर मंत्री ने क्रोध में आकर हाथ उठाया और कहा, ''अरे दुष्ट ! तुमने महाराजा की अनुमति के बिना कुछ बक दिया, इस अपराध में इसी वक़्त तुम्हारा सिर काटा जा सकता है, फिर भी हमें तुम्हारा परिचय पाना है, इसलिए तुम बच गये। चन्द्रशिला नगर के जंगल में

कालीवर्मा को बन्दी बना लिया है।

उस वक़्त राजा जितकेतु अपने प्रधान मंत्री के साथ पड़ोसी देश के राजा के हमले के संबंध में मंत्रणा कर रहे थे। कालीवर्मा के बन्दी बनने का समाचार सुनकर वे बहुत ही प्रसन्न हुए और बोले, ''महामंत्री ! मैंने सोचा था कि कालीवर्मा नामक की वजह से हमें पड़ोसी देश के साथ युद्ध करने की नौबत आ गई है। अब तो वह हमारे हाथ आ गया है। अब आप बताइये कि हम इसे प्राणों के साथ दुर्मुख के पास भेज दें या इसे फाँसी पर चढ़ाकर इसकी लाश भेज देना उचित होगा?''

''महाराज ! राजा दुर्मुख के पत्र के अनुसार ये दोनों कार्य उनके लिए स्वीकार्य हैं। मगर हमें इस बात का सही सबूत चाहिए कि लुटेरों को उदयगिरि के राज्य में भगानेवाला कालीवर्मा यही

बसनेवाले लुटेरों को क्या तुमने ही उदयगिरि के राज्य में भगा दिया था? तुम्हारा नाम क्या है?''

''मेरा नाम कालीवर्मा है ! मैं इसी राज्य का नागरिक हूँ। यह सच है कि हमारे देश की जनता की संपत्ति व अनाज को लूटनेवाले लुटेरों का मैंने गाँववालों की मदद से सामना किया और उनमें से कुछ लोगों को मार भी डाला। मगर उनमें से कुछ लुटेरे हमारे राज्य की सीमा को पारकर उदयगिरि के जंगलों में भाग गये होंगे, ऐसी हालत में इसका जिम्मेवार मैं कैसे बन सकता हूँ?'' कालीवर्मा ने कैफ़ियत दी।

यह उत्तर सुन मंत्री क्रोध में आया और बोला, ''महाराज ! मैंने इससे जो सवाल पूछा, उसका अपराधी ने न केवल कड़ा उत्तर दिया, बल्कि वह उल्टा सवाल हमहीं से कर रहा है ! आप इसे उचित दण्ड दीजिए !''

राजा जितकेतु ने एक बार कालीवर्मा की ओर तीव्र दृष्टि डाली और कहा, ''ओह ! यही वह कालीवर्मा है, जिसे हमें दण्ड देना है ! सुनो वर्मा, तुमने मेरी अनुमति के बिना मेरे कुछ नागरिकों का वध किया और साथ ही पड़ोसी देश के राजा के साथ शत्रुता का कारण बन गये हो, इसलिए मैं तुम्हें मौत की सजा देता हूँ !''

यह आदेश सुनते ही कालीवर्मा पल भर के लिए चकित रह गया, फिर संभलकर बोला, ''महाराज ! किस न्याय सूत्र के अनुसार आप मुझे यह दण्ड दे रहे हैं? मेरे पिताजी आपके पिताजी के दरबार में नौकरी करते हुए एक युद्ध
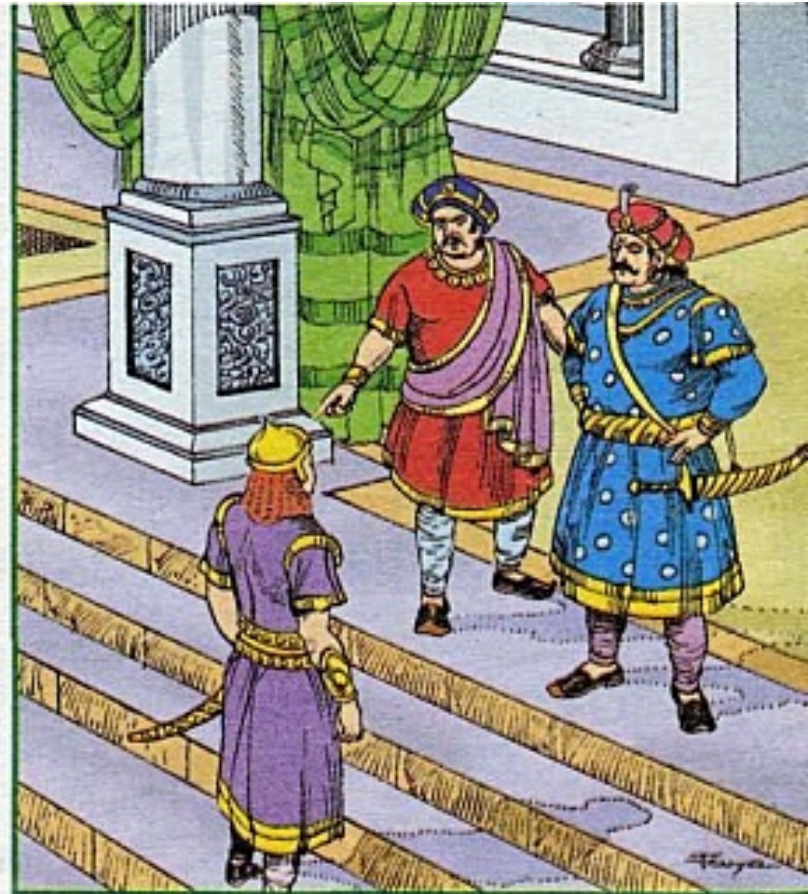
में अपने प्राण खो बैठे ! मैं आपके यहाँ नौकरी करने के हेतु अपने गाँव को छोड़ इतनी दूर आया हूँ। जनता को लूटनेवाले लुटेरों का अंत करने का फल मुझे मृत्युदण्ड मिल रहा है?''

''यह तो तुम्हारी ज़्यादती है !'' मंत्री ने कड़ककर कहा, फिर सैनिकों से बोला, ''तुम लोगों ने महाराजा का आदेश सुन लिया है न? कालीवर्मा को नगर की सीमा पर स्थित सिरस के वन में फांसी लगाकर उसकी लाश को तुम लोग उदयगिरि के राजा की सेवा में भेज दो !''

मंत्री के मुँह से ये शब्द निकलने की देरी थी कि जनता में कोलाहल मच गया। उनमें से कुछ लोग उच्च स्वर में चिल्ला उठे, ''यह कैसा अन्याय है? महाराज ! आपने कालीवर्मा को जो दण्ड दिया है, उसके बारे में फिर विचार कर लीजिए ! कालीवर्मा ने हम लोगों का उपकार किया है।''

''तुमने राजा का आदेश सुन लिया है न? बेचारे, तुम इतनी छोटी उम्र में संसार को छोड़कर जा रहे हो ! इस का मुझे बड़ा दुख है ! मगर राजा का आदेश पत्थर की लकीर होता है !''

मंत्री की बातें सुन कालीवर्मा क्रोध के मारे कांप उठा। म्यान से तलवार खींचने का प्रयत्न करके फिर रुक गया, तब बोला, ''तुम्हारे राजा का आदेश कैसा मूर्खतापूर्ण है, इसे जनता को छोड़ किसी ने समझने की कोशिश नहीं की। पड़ोसी देश के राजा से डरकर जनता की भलाई करनेवाले मुझे राजा जितकेतु फांसी पर लटकाने जा रहे हैं ! यह तो अन्याय है !''
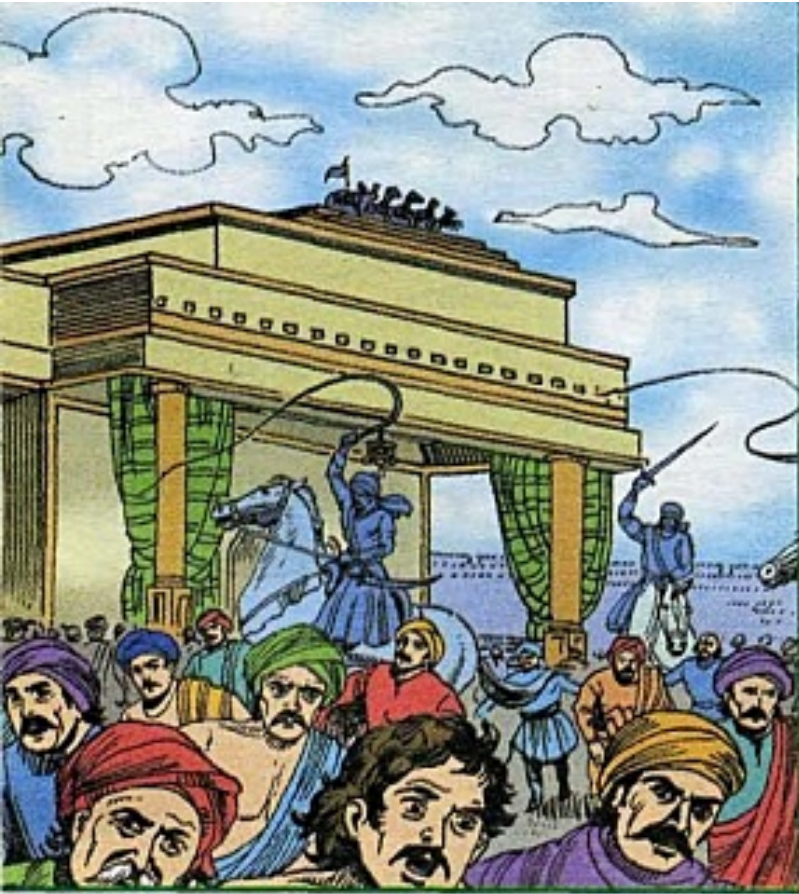
''यह तो आश्चर्य की बात है ! महाराजा को ही सलाह देनेवाले विवेकशील व्यक्ति इस नगर में हैं?'' इन शब्दों के साथ मंत्री ने दांत भींचकर सैनिकों को आज्ञा दी, ''उन चिल्लानेवाले राजद्रोहियों को पकड़कर कारागार में डाल दो।''

मंत्री का आदेश पाकर घुड़सवार सैनिकों ने अपने घोड़ों को भीड़ की ओर दौड़ाया। लोग भयकंपित हो तितर-बितर होने लगे। इसे देख महाराजा जितकेतु प्रसन्नतापूर्वक मुस्कुराकर बोले, ''दण्डनीति ही इस असभ्य जनता को नियंत्रणमें रख सकती है। महामंत्री ! आपने वक़्त पर सही आदेश जारी किया है।'' यों महामंत्री की तारीफ़ करके राजा अपने महल की ओर चल पड़े। मंत्री ने भी उनका अनुसरण किया।

जनता की भीड़ को दूर भगाकर अश्वदल का नेता कालीवर्मा के निकट आया, तब बोला,

''राज्य की भलाई की बातें केवल राजा ही जानते हैं ! तुम और मैं क्या समझ सकते हैं? अच्छी बात है ! चलो, तुम्हें जिस सिरस वन में फाँसी पर चढ़ाया जा रहा है, वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते शायद राजा दया करके फाँसी को रद्द करने का आदेश जारी करें ! इसके पूर्व कुछ अपराधी अंतिम क्षणों में इसी प्रकार फांसी से मुक्त हो गये हैं !'' अश्वदल के नेता ने समझाया।

वास्तव में कालीवर्मा ऐसे आदेश की आशा नहीं रखता था। उसने सोचा कि किसी न किसी उपाय से सैनिकों से बचकर उसे भाग जाना होगा ! यों विचार करके उसने अपने मन में निर्णय किया कि नगर की सीमा पार करने केबाद यह प्रयत्न करना ज़्यादा उचित होगा !

अश्वदल के नेता ने अपने अनुचरों को सावधान करके कालीवर्मा से कहा, ''अब तुम्हारे

हाथों में हथकड़ियाँ लगानी होंगी।'' ये शब्द कहते वह कालीवर्मा के समीप पहुँचा।

''थोड़े क्षणों में मरनेवाले के हाथों में हथकड़ियाँ क्यों? तुम्हारा डर तो यही है न कि मैं भाग जाऊँगा? लो, चाहे तो मेरी तलवार ले लो! इतने सारे हथियार-बंद सैनिकों के बीच में से मैं बेहथियार व्यक्ति कैसे बचकर भाग सकता हूँ?'' इन शब्दों के साथ कालीवर्मा ने म्यान से तलवार खींचकर अश्वदल के नेता के हाथ में दे दिया।

अश्वदल का नेता संतुष्ट होकर बोला, ''कालीवर्मा! कहा जाता है कि मरनेवाले क़ी इच्छा की पूर्ति करना पुण्य है! अगर तुमने भागने की कोशिश की तो हम यहाँ पर दस अश्वारोही हैं, हमारी दस तलवारें तुम्हारे बदन को छलनी बना सकती हैं! ख़बरदार!''

इसके बाद कालीवर्मा के आगे पाँच सैनिक तथा पीछे पाँच सैनिक खड़े हो नगर की सीमा की ओर चल पड़े। उस समय जनता राजा जितकेतु की दुष्टता की निंदा करने लगी।

एक घंटे के बाद सब लोग नगर की सीमा पर स्थित सिरस बन के समीप पहुँचे। उस बन के नजदीक़ ऊँचे पहाड़ थे। एक पहाड़ी झरना बीस-तीस फुट ऊँचाई पर से नीचे की चट्टानों पर गिरकर भयंकर ध्वनि कर रहा था!

अश्वारोहियों के साथ पेड़ों के बीच प्रवेश करते ही कालीवर्मा ने बचने के लिए उपाय सोचते हुए चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर पूछा, ''तुम लोग क्या यहीं पर मुझे फाँसी लगाने जा रहे हो?''

अश्वदल का नेता उत्तर देने जा रहा था, तभी एक भैंसे पर सवार एक काली आकृति उन्हें दिखाई दी। भैंसे पर सवार व्यक्ति सिर से पैर

तक काला नक़ाब ओढ़े हुए था। पर पैरों के पास नक़ाब में छेद थे।

भैंसे पर सवार व्यक्ति अपने हाथ का परशु ऊपर उठाकर अश्वारोहियों की ओर तीव्र गति से बढ़ते हुए ललकार उठा, ''तुम लोग कौन हो? इस प्रधान बधिक के द्वारा इसके पूर्व शिरच्छेद किये गये लोगों के प्रेत हो? या नये नये शिरच्छेद कराने के लिए आये हुए लोग हो?''

भैंसे को अपनी ओर तेज़ी से बढ़ते देख घोड़े भड़क उठे और जोर से हिनहिनाते इधर-उधर भागने लगे! भागने का यह अच्छा मौक़ा मानकर कालीवर्मा अपने घोड़े को आगे बढ़ाने ही वाला था, तभी भैंसे पर सवार व्यक्ति बिजली की गति के साथ आ पहुँचा, घोड़े की लगाम को पकड़ करके बोला, ''भूत-प्रेतों को सिरस के पेड़ अत्यंत प्रिय होते हैं; इसलिए राजा लुटेरों और देश-द्रोहियों को मौत की सजा यहीं पर देते हैं! तुम डाकू हो या देशद्रोही?''

''मैं इन दोनों में से कोई नहीं हूँ! लेकिन यह बताओ, तुम किस जाति के पिशाच हो?'' कालीवर्मा ने लगाम को उसके हाथ से खींचने की कोशिश करते हुए पूछा। इतने में तितर-बितर हुए सारे अश्वारोही वहाँ पर आ पहुँचे। अश्वदल के नेता ने क्रोधपूर्ण स्वर में भैंसे पर सवार व्यक्ति से पूछा, ''अबे, यह उद्दण्डता कैसी? क्या तुम्हारे अंदर कोई पिशाच तो प्रवेश नहीं कर गया है?''

इस पर भैंसे पर सवार व्यक्ति कालीवर्मा के घोड़े की लगाम को छोड़कर बोला, ''तुम नगर के प्रधान बधिक को ही अबे-तबे पुकारते हो? राजा किसी भी दिन तुम्हें मौत की सजा देकर मेरे पास भेज सकते हैं? तब मैं अपने ठूँठे परशु से ठूँठ की तरह काट डालूँगा!''

''अबे पियक्कड़! मैं यह अपमान सहन नहीं कर सकता!'' इन शब्दों के साथ उसने झट से म्यान से तलवार निकाली। दूसरे ही क्षण कालीवर्मा ने बधिक के हाथ से परशु खींच लिया और अश्वदल के नेता की गर्दन पर दे मारा।

अश्वदल के नेता की गर्दन दूर जा गिरी। तभी दूर से यह पुकार सुनाई दी, ''आदि भल्लूक की जय! हे युवक! तुम अत्यंत पराक्रमी हो!''

(क्रमशः)

राजा विक्रम और वेताल की नई कथाएँ

शंतनु का निर्णय

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, यह आधी रात का समय है। यहाँ भयंकर जंतुओं की भरमार है। वे किसी भी क्षण तुम पर प्रहार कर सकते हैं और तुम्हारा अहित कर सकते हैं। तुम्हें जो नहीं जानते, इस स्थिति में तुम्हें देखकर शायद समझेंगे कि तुम कोई क्षुद्र देवोपासक हो या मांत्रिक। यह तथ्य शायद तुम भूल गये कि तुम एक महान राजा हो। प्रजा की रक्षा करना और उन्हें सुखी रखना तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है। अपने इस कर्तव्य को भूलकर क्यों नाहक अपना
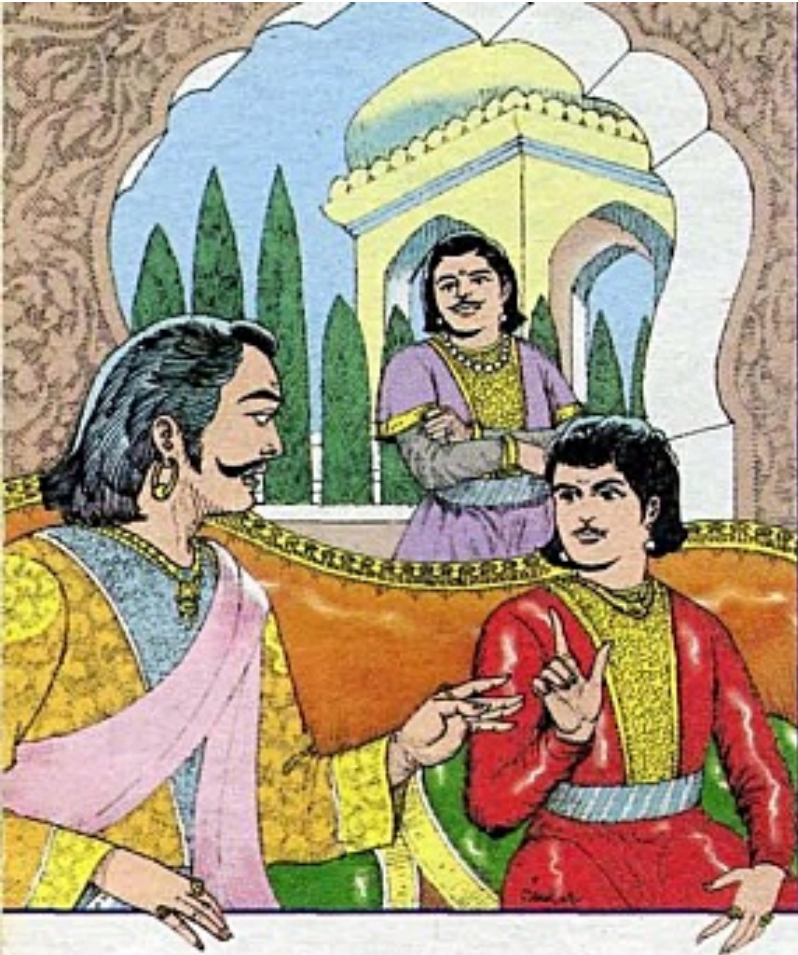
समय व्यर्थ कर रहे हो और ख़तरा मोल ले रहे हो। तुम्हारा शायद समझना है कि धर्म और न्याय तुम्हारे पक्ष में हैं, इसलिए विजय तुम्हारी होकर रहेगी। परंतु यह केवल तुम्हारा भ्रम है। देखा गया है कि कुछ संदर्भों में शासन करनेवाले व्यक्तियों के कारण तथाकथित इस न्याय और धर्म पर परदा पड़ जाता है। इसके लिए उदाहरणस्वरूप मैं शंतनु नामक राजा की कहानी सुनाता हूँ। ध्यान से सुनो।'' फिर बेताल, शंतनु की कहानी यों सुनाने लगा :

शंतनु नामक राजा क दो बेटे थे। पहला बेटा कुंतल शांत स्वभाव का था। दूसरा बेटा चित्रांग जल्दबाज़ था।

जब शंतनु ने यह समझ लिया कि दोनों बेटे सभी शास्त्रों में पारंगत हो गये, अस्त्र-शस्त्र विद्याओं में भी निष्णात हो गये, तब उसके लिए यह समस्या आ गयी कि इन दोनों में से किसे राजा बनाऊँ।

वास्तव में शंतनु का वारिस कुंतल ही था। बड़े बेटे को ही राज्याधिकार सौंपना न्यायसंगत है। परंतु चित्रांग का दावा था कि अपने पिता के बाद उसी को शासक बनाना होगा। पिता के समझाने पर भी वह टस से मस न हुआ। वह अपने निर्णय पर डटा रहा। कुंतल ने इसपर कोई आपत्ति नहीं उठायी और उसने अपने पिता से कहा, ''भाई चित्रांग राजा बनना चाहता है। उसे ही राज्याधिकार सौंपिये, उसी का राज्याभिषेक कीजिए। मैं उसकी सहायता करता रहूँगा।''

''भैया को जब कोई आपत्ति नहीं है तो आपको क्या आपत्ति हो सकती है?'' चित्रांग ने अपने पिता से पूछा।

''भाइयों में से जो बड़ा होता है, उसी को सिंहासन पर बिठाना इस राज्य की परम्परा रही है। इस परम्परा को बरक़रार रखना मेरा धर्म है। इस परम्परा को तुम तोड़ना क्यों चाहते हो?'' शंतनु ने पूछा।

''मैं राजा बनना चाहता हूँ, परंतु भैया राजा बनना नहीं चाहते। जो राजा बनना चाहता है, उसे राजा न बनाकर, जो राजा बनना नहीं चाहता, उसे राजा बनाना अच्छा प्रचलन नहीं कहा जा सकता।'' चित्रांग ने स्पष्ट बता दिया।

''ऐसी स्थिति में यह कहना भी अच्छा नियम नहीं है कि मेरे ही परिवार का कोई सदस्य राजा बने। देश भर में जो सबसे समर्थ और योग्य व्यक्ति

है, उसी को शासन-भार सौंपना समुचित होगा। क्या मेरे विचार से तुम सहमत हो?'' शंतनु ने मुस्कुराते हुए पूछा।

बिना घबराये दृढ़ स्वर में चित्रांग ने कहा, ''हमारी प्रजा राजपरिवार का आदर करती है। उनके हृदय में हमारे लिए विशेष प्रेम है। वह और किसी को इतना नहीं चाहती।''

शंतनु ने कहा, ''चूंकि शंतनु मेरा बड़ा बेटा है, इसलिए लोग उसी का अधिक आदर करते हैं। इसलिए मैं उसी को राजा बनाना चाहता हूँ।''

चित्रांग अपने पिता की बातों से क्रोधित होकर कहा, ''मैं इसका विश्वास नहीं करता।''

शंतनु ने बहुत सोच-विचार के बाद दोनों बेटों को यह जानने के लिए कि लोग उनका कैसे आदर कर रहे है, देश में पर्यटन करने के लिए भेज दिया। एक गुप्तचर को भी उनके साथ भेजा।

देश की पूरी प्रजा राजकुमारों के स्वभावों से अच्छी तरह परिचित थी। इसलिए उन्होंने चित्रांग का अधिक आदर किया। यद्यपि उन्होंने कुंतल को चाहा, पर यह चाहत प्रकट होने नहीं दी।

देश में घूम चुकने के बाद चित्रांग ने पिता से मिलकर कहा, ''आपसे नियुक्त किये गये गुप्तचर से अब तक आपको सचाई मालूम हो गयी होगी। लोग भैया से बढ़कर मेरा ही आदर करते हैं।'' गर्व भरे स्वर में चित्रांग ने कहा।

''कुंतल को प्रजा अपना मानती है। वह प्रजा का है। हमारी प्रजा तुमसे डरती है। प्रजा जिसे हृदयपूर्वक चाहती है, वही राजा बनने के योग्य
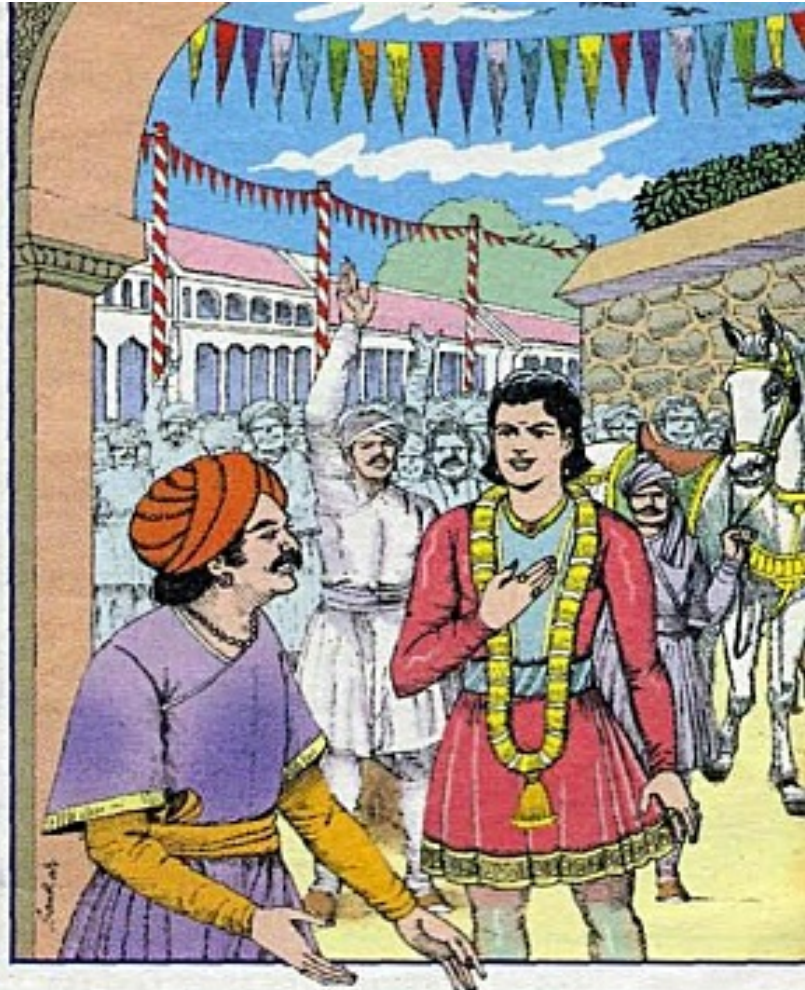
है।'' शंतनु ने कहा।

चित्रांग आग-बबूला होते हुए बोला, ''प्रजा जिसे चाहती है, वह उनमें एक हो सकता है, पर वह उनका राजा नहीं बन सकता। राजा वह है, जिससे प्रजा डरती हो और उसके प्रति आदर व भक्ति की भावना दिखाती हो। प्रजा में मेरे प्रति वे तीनों भावनाएँ हैं, इसलिए मेरा राजा बनना ही उचित होगा।''

शंतनु ने हँसते हुए कहा, ''एक बात अच्छी तरह से याद रखो। तुम्हारे राजा बन जाने के बाद अगर तुम्हारा शासन समर्थ नहीं हुआ तो प्रजा तुम्हारा आदर करना छोड़ देगी।''

''ठीक है, अगर यही बात है तो मैं यह साबित करूँगा कि भैया की तुलना में मैं अधिक समर्थ हूँ। इसके लिए मुझे मौक़ा दीजिए।'' चित्रांग ने कहा।

"ठीक है। राजधानी की सरहदों पर एक के बगल में एक ताड़ के तीन पेड़ हैं। राज्य भर में अफ़वाह फैली है कि उन पर दुष्ट शक्तियाँ निवास कर रही हैं। बीस साल पहले अपनी तलवार से मैंने तीनों पेड़ों को एक साथ काट डाला था। साधारणतया ताड़ का पेड़ जब एक बार काट दिया जाता है, वह फिर से फलता-फूलता नहीं है, पर वे पेड़ फिर से उग आये। मैं समझता हूँ कि दुष्ट शक्तियों ने उनपर फिर से अपना निवास स्थान बना लिया है। उन्हीं के प्रभाव से लगता है, तुममें भी राजा बनने की बुरी इच्छा पैदा हुई है। क्या तुम एक ही बार में उन तीनों पेड़ों को काट सकते हो?" शंतनु ने पूछा।

"अवश्य ही काट सकूँगा।" चित्रांग ने कहा। पर मन ही मन उसने निश्चय कर लिया कि यह काम उसका बड़ा भाई नहीं कर सकता। इसी विश्वास के आधार पर उसने कहा, "पहले भाई को यह काम सौंपिये।"

शंतनु ने जब कुंतल से यह बात कही तो उसने कहा, "मुझे पूरा विश्वास है कि मैं तीनों पेड़ों को एक ही बार में काट सकूँगा। ऐसा करने पर भैया को अपना सामर्थ्य प्रदर्शित करने का मौक़ा नहीं मिलेगा। इसलिए अच्छा यही होगा कि वही पहले यह कोशिश करे।"

तब चित्रांग ने तीनों पेड़ों को एक ही बार में काट गिराकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। पर तब भी शंतनु ने, चित्रांग से कहा, "मैंने बहुत पहले उन दुष्ट शक्तियों से देश को मुक्त करने के लिए उन पेड़ों को काटा था। पर तुमने राजा बनने की आकांक्षा से प्रेरित होकर उन पेड़ों को काटा है। स्वार्थी राजा बन जाए तो वही दुष्ट शक्ति साबित होगा।"

"आप मुझपर झूठा आरोप लगा रहे हैं। उन दुष्ट शक्तियों से देश को मुक्त करने के लिए ही मैंने उन पेड़ों को काटा है। आप एक काम कीजिए। मुझे और भाई को एक-एक नगर सौंपिये। एक साल तक हम उनपर शासन करेंगे। तब आप खुद जान जायेंगे कि हमारे शासन के बारे में जनता का क्या फैसला है। फिर आपसे लिया जानेवाला निर्णय मेरे लिए शिरोधार्य है।" चित्रांग ने यों उपाय सुझाया। शंतनु ने चित्रांग का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उसने कुंतल को धर्मपुरी और चित्रांग को सत्यपुरी के शासन का भार सौंपा। दोनों ने एक साल तक उन नगरों का शासन संभाला।

जैसे ही कुंतल ने नगर की जिम्मेदारी संभाली, उसने धर्मपुरी की जनता को एकसाथ बुलाया और उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। कुछ योग्य लोगों के सहयोग से समर्थ व्यक्तियों को चुना। उन्हें पूरी, स्वतंत्रता दी। कोई भी, कभी भी उससे मिल सकता है और अपनी शिकायत सुना सकता है। अमीरों और ग़रीबों में फर्क किये बिना वह सबकी भलाई करने में लगा रहा। वह जनता का एक अभिन्न भाग बन गया। वह अधिकतर गरीबों के घरों में खाता-पीता था और उनके दुःख-सुखों के बारे में जानकारी पाता था।

अब रही, चित्रांग की बात। वह सत्यपुरी का तानाशाह हो गया अपने मित्रों और प्रशंसकों को उच्च स्थानों पर नियुक्त करने लगा। तरह-तरह के मनोरंजनों को प्रोत्साहित करने लगा। अपने बिरोधियों को कुचल ड़ालने लगा। उन्हें सजाएँ देने लगा। उसके शासन-काल में लोग भयभीत रहने लगे।

एक ही साल के अंदर दोनों नगरों की अच्छी वृद्धि हुई। शंतनु गुप्तचरों के द्वारा दोनों नगरों की स्थिति की जानकारी पाता रहता था। उन नगरों के नागरिकों की रायें भी जानीं। सत्यपुरी के नागरिकों ने मुक्तकंठ से चित्रांग को योग्य राजा घोषित किया। धर्मपुरी की जनता ने भी लगभग मुक्तकंठ से कुंतल को भी योग्य माना।

एक साल पूरा हो जाने के बाद शंतनु ने दोनों बेटों को अपने यहाँ बुलाया और उनसे कहा, ''प्रजा

का मत भी मैंने पूरी तरह से जान लिया। मैंने निर्णय ले लिया कि कुंतल ही सिंहासन पर आसीन होगा। वही इस देश का शासक होगा।''

कुंतल ने हँसते हुए कहा, ''आपके निर्णय का पालन करूँगा।''

पर चित्रांग ने क्रोध-भरे स्वर में कहा, ''जनता की राय जानना क्या पर्याप्त है? क्या उसे अमल में नहीं लायेंगे?''

तब शंतनु ने गंभीर स्वर में कहा, ''हमारे देश में जितने नगर हैं। उन नगरें के शासन में राजा दखल नहीं देता। नगरपाल अगर समर्थ हो तो राजा के असमर्थ हाने पर भी उस नगर की समृद्धि होगी। अगर नगरबाल असमर्थ हो तो राजा के समर्थ होने पर भी उस नगर का भला नहीं होता। वहाँ के लोगों को कितने ही कष्ट सहने पड़ते हैं। यह तथ्य धर्मपुरी, सत्यपुरी के नागरिक बखूबी

जानते हैं। इसीलिए मैं कुंतल का राज्याभिषेक करने जा रहा हूँ। यह मेरा अटल निर्णय है।''

बेताल ने कहानी कह चुकने के बाद कहा, ''राजन्, शंतनु का निर्णय-धर्म और न्याय के विरुद्ध है। पहले ही से उसने कुंतल का पक्ष लिया। नगरपालिका के विषय में उसन जो परीक्षा चलायी, उसमें चित्रांग की ही जीत हुई। जनता ने भी अपना निर्णय उसी के पक्ष में सुनाया। इन तथ्यों को दृष्टि में रखते हुए क्या तुम्हें नहीं लगता कि शंतनु का निर्णय न्याय और धर्म के विरुद्ध है, वह अनुचित है? मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी तुम चुप रहोगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने इसके जवाब में कहा, ''मानता हूँ कि धर्म और न्याय सर्वत्र आचरणीय हैं, परंतु कभी-कभी समय और संदर्भ के अनुसार राजनीति के अनुकूल उनके परिवर्तित होने की संभावना है। यही नहीं, धर्म और सत्य कालातीत नहीं होते। समय के अनुसार उनमें परिवर्तन होते रहते हैं। धर्मपुरी की जनता ने कुंतल को अगर योग्य नगरपाल नहीं माना है तो लगता है कि उन्होंने वास्तवकिता को समझा, ग्रहण किया। वह सबका आदरणीय बना। पर उन्हें इस बात का भय है कि अगर वह राजा बने तो पता नहीं, किस प्रकार का नगरपाल भविष्य में आयेगा और उनपर शासन करेगा। इसलिए वे उस धर्मपाल को छोड़ने के पक्ष में नहीं थी। अब रही, सत्यपुरी की बात। लगता है कि वहाँ के नागरिक, जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी चित्रांग से छुटकारा पाना चाहते हैं। उसने अपने मित्रों की व अपने प्रशंसकों की ही मदद की। उसने जनता का कोई विशेष कल्याण नहीं किया। उससे छुटकारा पाने के लिए ही उन्होंने उसे राजा बनाने की इच्छा प्रकट की। जिस नेता को जनता जाने देना नहीं चाहती, वही देश के योग्य राजा है। शंतनु राजनीति के इस सूत्र से भली-भांति परिचित था। इसीलिए उसने कुंतल का राज्याभिषेक करने का निर्णय लिया। यह कतई धर्म और सत्य के विरुद्ध नहीं है।'' राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा। *(आधार रंगनायकी की रचना)*

कर्नाटक के समुद्र तट

कर्नाटक के दक्षिणी भाग में २०० मील लम्बी तट रेखा है। इस लम्बाई का लगभग आधा भाग उत्तर कर्नाटक जिले (पहले उत्तर कनारा) में है। यहाँ २४ समुद्र तट हैं। सभी अक्षत और साफ-सुथरे हैं। वहाँ की झिलमिलाती रेत स्थानीय दर्शकों तथा सैलानियों, दोनों को आकर्षित करती है। इनमें से एक समुद्र तट पर सबसे अधिक पर्यटक आते हैं, क्योंकि इसकी बनावट शुभ ओम चिह्न से मिलती-जुलती है। इस कारण यह ओम तट कहलाने लगा, इसमें आश्चर्यजनक बात कुछ नहीं है। एक दूसरे समुद्र तट का नाम है - रवीन्द्रनाथ टैगोर बीच।

सरस्वती का स्रोत

भारत की मुख्य नदियों में सरस्वती की गणना भी होती है, हालांकि इसका कहीं कोई चिह्न दिखाई नहीं पड़ता, फिर भी, प्रयाग में गंगा और यमुना के साथ इसके संगम को वास्तविक मान लिया गया है। भारतीय पुरातत्वीय सर्वेक्षण इस लुप्त नदी के स्रोत की खोज करने के लिए हरियाणा में व्यापक खुदाई कार्य कर रहा है। आदि बद्री के एक स्थान पर मिट्टी के बर्तन, उत्कीर्ण किये गये पटिया, अनेक शिल्प तथ्य, एक बरामदा, एक ध्यान कक्ष तथा बुद्ध की एक प्रतिमा मिली है, जिनसे पता चलता है कि एक नदी के किनारे कुछ लोग रहते थे। पुरातत्वज्ञों का विश्वास है कि वह नदी केवल सरस्वती ही रही होगी। उनके मुताबिक आदि बद्री उन स्थानों में से एक है जो सरस्वती के तट पर बसा हुआ था।

भारत की पौराणिक कथाएँ – २०

अर्द्धरात्रि का युद्ध

पहाड़ी क्षेत्र की लम्बी यात्रा के बाद दोनों यात्री, विजन और विपुल, अन्त में एक विश्राम गृह में पहुँचे। वे एक दूसरे को यों ही थोड़ा-बहुत जानते थे, क्योंकि वे घण्टा भर पहले ही संयोगवश एक सराय में मिले थे। दोनों का गन्तव्य एक था। दोनों ने सराय में खाना खाया था और विपुल ने काफी शराब पी ली थी।

आधी रात बीत चुकी थी। दोनों थके-माँदे मुसाफिर यह जान कर बड़े प्रसन्न हुए कि विश्राम घर में दो कमरे खाली हैं। एक पहली मंजिल पर था और दूसरा दूसरी मंजिल पर।

''भद्र लोगों दोनों कमरे अभी-अभी साफ किये गये हैं और दोनों में लालटेनें जल रही हैं। कृपया, जाकर देख लें। आप चाहें तो दोनों में से एक कमरा ले लें या दोनों व्यक्ति एक-एक कमरा ले लें,'' विश्राम घर के मैनेजर ने कहा।

विजन ने विपुल की संकरी सीढ़ियों पर चढ़ने में मदद की। जब वे पहली मंजिल पर पहुँच गये, विपुल ने विजन से कहा, ''मैं यहाँ ठहरता हूँ, लेकिन इस कमरे में मेरे लिए रोशनी कम है। कृपया ऊपर के कमरे को जाकर देखिये। यदि वह अधिक हवादार है तो मैं वहीं सोना पसन्द करूँगा।''

विजन ऊपर गया और एक मिनट में लौट आया। ''हाँ, सचमुच, ऊपर का कमरा हवादार है और कई तरह से अच्छा है। हम दोनों उसमें एक साथ ठहर सकते हैं।'' वह बोला।

"नहीं मेरे दोस्त, मैं किसी के साथ नहीं ठहर सकता।" विपुल ने अनूठे ढंग से अपने हाथ को हिलाते हुए रुखाई से जवाब दिया, यद्यपि उसके लब्ज टूट रहे थे। ज्यादा पी लेने से वह इनसानियत से नीचे उतर आया था। "मैं वहाँ अकेला सोऊँगा। तुम यहाँ रह सकते हो।"

विजन नाराज नहीं हुआ, क्योंकि शराबी के साथ रहने का उसका कतई इरादा नहीं था, क्योंकि उससे शराब की दुर्गन्ध आ रही थी।

"ठीक है। चलो, मैं तुम्हें कमरे में छोड़ आता हूँ," अपने साथी का सीढ़ियों पर मार्ग दर्शन करने के लिए तैयार विजन ने कहा। उसने विपुल का बैग उठाया और उसका हाथ पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। किन्तु विपुल ने उसका हाथ झटक दिया और चिल्लाते हुए कहा, "तुम मुझे क्या समझते हो? क्या मैं बचा हूँ? मैं किसी का सहारा लिये बिना विन्ध्याचल के शिखर पर चढ़ सकता हूँ। मुझे स्वयं जाने दो।" उसने विजन के हाथ से बैग झपट लिया।

"बहुत अच्छे, बहुत अच्छे! जाओ, अकेला ही जाओ! शुभ रात्रि!" विपुल के कमरे से निकलते ही अपना दरवाजा बन्द करते हुए विजन ने कहा।

विजन अच्छी तरह सोया और जब उसकी नींद खुली तो सुबह का सुहावना और शान्त वातावरण उसका स्वागत कर रहा था। शीघ्र ही वह अपने गन्तव्य की ओर चल पड़ने के लिए तैयार हो गया। लेकिन क्या उसका साथी भी इसके साथ जाना चाहेगा? विजन यह पूछने के लिए ऊपर चढ़ा।

लेकिन विपुल सो रहा था, कमरे में नहीं, बल्कि बालकनी में। विजन ने यथासंभव धीरे से उसे उठाया। वह उठ बैठा, आँखें मलीं और चारों दिशाओं में नज़र दौड़ाई। उसके चेहरे पर आशंका और भय के स्पष्ट चिह्न थे। उसने विजन को
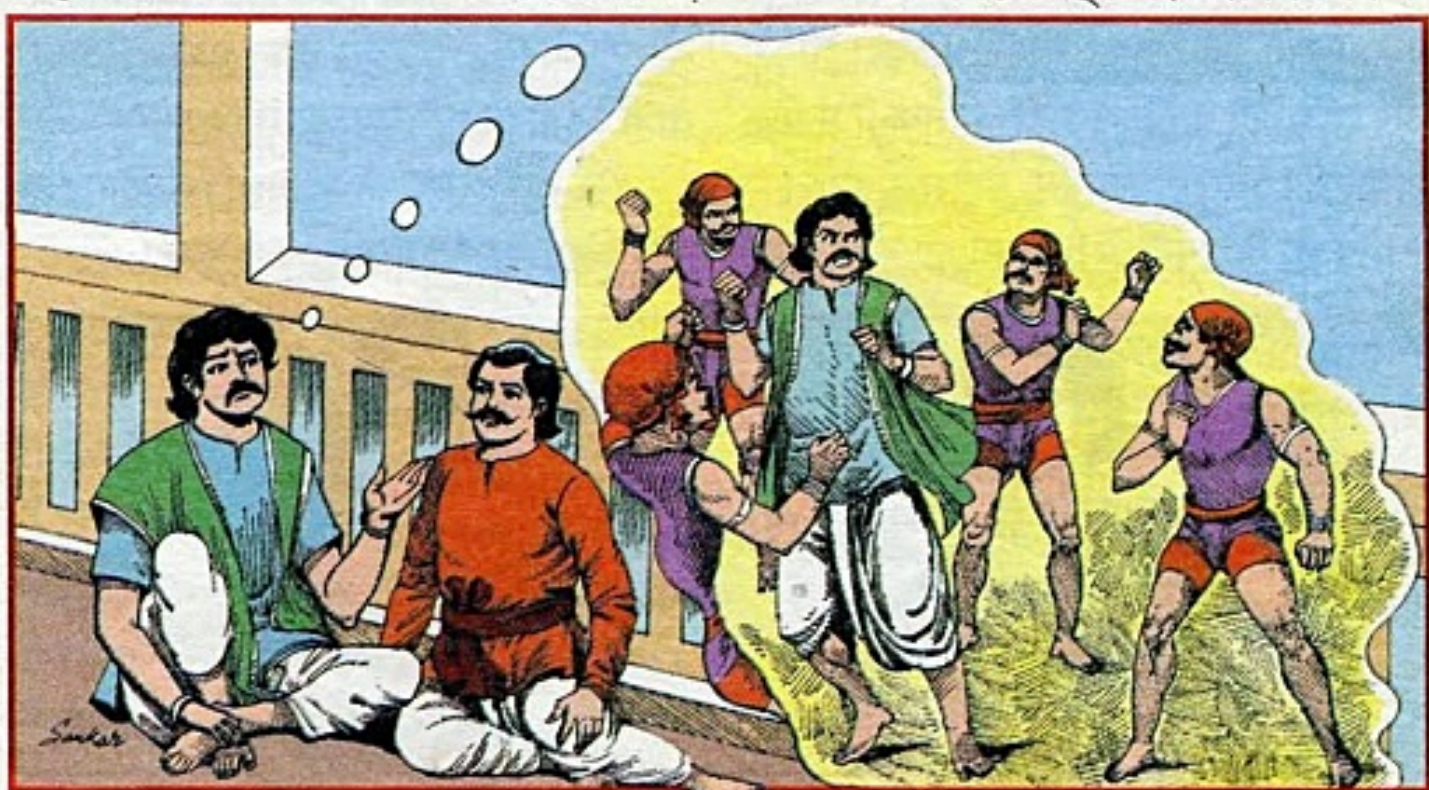
पर्वत ऊँचे हैं; उनसे ऊँची है पृथ्वी। पृथ्वी से भी ऊँचा है ब्रह्माण्ड। किन्तु प्रलय काल में जो महान आत्माएँ शान्त बनी रहती हैं, वे सबसे ऊँचे हैं।

- भामिनी विलास

बड़े गौर से देखा, तब उसे विश्वास हुआ कि सामने उसका साथी विजन है, और कोई नहीं। तभी उसने पूछा, ''उन गुण्डों का क्या हुआ? वे मेरा बैग लेकर चम्पत हो गये होंगे।''

''गुण्डे? यहाँ तुम्हारे सिवा कोई न था। और तुम्हारा बैग सही सलामत तुम्हारे कमरे में है!'' विजन ने कहा।

विपुल को, रात में जो कुछ हुआ उसे याद कर उसका विवरण देने में, थोड़ा समय लगा। जैसे ही वह कमरे में आया, चार गुण्डे, जो कमरे में छिपे हुए थे, चार दिशाओं से आकर उस पर टूट पड़े। उसने उन सबका सामना किया। लेकिन उसे याद नहीं है कि कब उसे बॉलकनी में फेंक दिया गया और वह संभवतः बेहोश हो गया।

विजन ने अपनी हँसी दबाते हुए कहा, ''मेरे दोस्त, मैं तुम्हें इस कमरे में साथ आकर छोड़ जाना चाहता था और यह बता देना चाहता था कि सभी चारों दीवारों पर बड़े-बड़े दर्पण लगे हैं। लालटेन की रोशनी में कमरे में प्रवेश करते समय तुमने अपनी परछाई को चारों दिशाओं से आते हुए देखा होगा। भाग्य से तुमने कोई दर्पण नहीं तोड़ा या टूटे दर्पण से तुम ज़ख्मी नहीं हुए हालांकि दर्पण पर पड़े निशानों से ऐसा लगता है कि उनमें से एक या दो से तुम टकरा गये हो।'' विजन ने समझाया।

विपुल थोड़ी देर के लिए नीरव बैठा रहा। तब वह एक गहरा उच्छ्वास लेकर बोला, ''आह! तो मैं अपने आपसे युद्ध कर रहा था।''

''हाँ! मेरे दोस्त, अपने अज्ञान के कारण हम प्रायः ऐसा करते हैं।'' विजन ने कहा।

अजीब सवाल

पूर्णिमा नामक एक बुढ़िया अपने बेटे और बहू के साथ आराम से रह रही थी। शिकायत का कोई मौक़ा वे देते ही नहीं थे। एक बार जब बेटा और बहू खेत में काम पूरा करके लौट रहे थे, तब भारी वर्षा होने लगी और उनपर बिजली गिरी, जिसके कारण वहीं उन दोनों की मृत्यु हो गयी। इससे बारह साल की उम्र की उनकी इकलौती बेटी लता को पालने-पोसने की जिम्मेदारी बुढ़िया पूर्णिमा पर आ गयी।

इस घोर विपत्ति को भी भुलाकर पूर्णिमा ने अपने दो एकड़ के खेत को पट्टे पर दे दिया और पोती की सहायता से पत्तल व तरह-तरह के अचार बनाकर जीविका चलाने लगी।

यों देखते-देखते आठ साल गुज़र गये। पूर्णिमा को अब कमर में पीड़ा रहने लगी और काम करने में असुविधा महसूस करने लगी। अलावा इसके, पट्टधारी ठीक तरह से खेत पर ध्यान नहीं दे रहा था। उसकी एकमात्र तीव्र इच्छा थी कि मरने के पहले एक संपन्न परिवार में पोती की शादी करा दूँ और उसे सुखी देखूँ।

उसे शहर में रहनेवाले नागराज की याद आयी, जो उसके बेटे का घना दोस्त था। उसने सुन रखा था कि वह सुगंधित वस्तुओं का व्यापार कर रहा है और खूब कमा रहा है। अब वह लखपति है। उसके दो बेटे भी हैं।

एक दिन वह गाँव के साहूकार रमेश राठी के घर गयी। कुशल-मंगल पूछने के बाद पूर्णिमा ने कहा, ''देखिये सेठजी, मैं बूढ़ी हो गयी हूँ। मेरी एकमात्र इच्छा है, मेरी पोती लता का विवाह संपन्न परिवार में हो। यदि किसी ग़रीब परिवार में उसकी शादी करा दूँ तो वे मेरी पोती से बेगारी करायेंगे और उसे तरह-तरह से दुख पहुँचायेंगे। इसलिए मैं चाहती हूँ कि मेरे बेटे के दोस्त नागराज से मिलने शहर जाऊँ और उसके बड़े बेटे से

- मुरलीधर -

अपनी पोती की शादी की बात करूँ। इसके लिए आवश्यक खर्च के लिए मुझे दो सौ रुपयों का कर्ज़ दीजिए।''

रमेश राठी को अच्छी तरह से मालूम था कि पूर्णिमा ने आराम से ज़िन्दगी गुजारी और कभी भी कोई कमी महसूस नहीं की। इसलिए बड़े ही विनम्र स्वर में उसने कहा, ''देखो पूर्णिमा, कैसी बात कर रही हो? नागराज के बेटे से तुम्हारी पोती का विवाह? जानती हो, वह अब लखपति है? भला वह क्यों तुम जैसी ग़रीब औरत की पोती से शादी करेगा? मेरे ब्याज का व्यापार भी ठीक तरह से चल नहीं रहा है। मज़दूर ज़ोर देकर ब्याज पर धन लेते हैं, पर लौटाने का नाम नहीं लेते। बुरा न मानना, मैं यह रकम दे नहीं पाऊँगा।'' रमेश राठी समझता था कि यह शादी नहीं हो पायेगी और बुढ़िया कर्ज़ लौटा नहीं पायेगी, इसलिए बहाना बनाकर उसने टाल दिया। उस समय उसका नौकर लड्डू ले आया तो उसने एक लड्डू पूर्णिमा की ओर बढ़ाया। परंतु उसे लेने से इनकार करते हुए पूर्णिमा ने कहा, ''ये लड्डू पचेंगे नहीं, मुझे नहीं चाहिए।'' यह कहती वह चली गयी।

रास्ते में, सबको सलाह देनेवाले भुजंग शास्त्री से उसकी मुलाक़ात हुई। उसने पूर्णिमा को देखते ही कहा, ''क्या बात है, पूर्णिमा चाची? इस धूप में कहाँ जाने निकल पड़ी हो?'' पूर्णिमा ने असली बात बतायी तो भुजंग शास्त्री ने बड़े ही प्यार भरे स्वर में कहा, ''चाची, पोती की शादी की बात को लेकर परेशान न होना। सब जानते हैं कि तुम्हारा कितना अच्छा परिवार है। तुम तो जानती ही हो कि मैं और तुम्हारा बेटा गहरे दोस्त थे। उसने मेरी बड़ी मदद की। दोस्त की बेटी की शादी करवाना मेरी भी जिम्मेदारी है। शहर में रहनेवाले उस नागराज को भी मैं खूब जानता हूँ। रक़म मिल भी जाए तो इस उम्र में तुम उतनी दूर जा नहीं पाओगी। आज ही मैं शहर जाऊँगा, नागराज से मिलूँगा और पोती की शादी के विषय में पूरी बातें करके लौटूँगा।''

''ऐसा ही करना बेटे, तुम्हारी मदद जन्म भर नहीं भूलूँगी।'' कहकर वह घर चली गयी।

भुजंग शास्त्री उसी दिन शहर गया, और उसने नागराज से विशद रूप से बातें कीं। लौटते ही वह पूर्णिमा के घर गया और पूरा

विषय सविस्तार बताते हुए उसने कहा, ''चाची, नागराज संपन्न है, पर वह तुम्हारे परिवार का आदर करता है। तुम्हारे बेटे की दोस्ती वह नहीं भूला। तुम्हारी पोती लता से अपने बड़े बेटे की शादी करने के लिए वह तैयार भी है। परंतु वह चाहता है कि उसकी होनेवाली बहू अक़्लमंद हो, होशियार हो और हो चुस्त।'' यह कहते हुए भुजंग शास्त्री ने टोकरी में रखे चांदी के एक लोटे को बाहर निकाला।

''इस लोटे के बारे में बाद में बताऊँगा। पहले तुम्हारी पोती को नागराज से पूछे गये दो सवालों का सही जवाब देना होगा। उसके सवाल हैं, ''खाना ही है तो बड़ा खाना खाना है, सुनना ही है तो महाभारत सुनना है।'' यह बात तो आम लोग भी कहते रहते हैं। महाभारत का दूसरा नाम भी है। तुम्हारी पोती को बताना होगा कि वह दूसरा नाम क्या है? भगवान प्रत्यक्ष होकर मानव को इच्छा-मृत्यु का वरदान देते हैं तो क्या वह मानव कभी मृत्यु का वरदान माँगेगा? ये हैं, नागराज के सवाल।''

पूर्णिमा इन सवालों को सुनकर आश्चर्य में डूब गयी और उसने दरवाजे के बग़ल में खड़ी अपनी पोती की ओर देखा। लता ने मुस्कुराकर भुजंग शास्त्री को देखते हुए कहा, ''ये कोई कठिन प्रश्न नहीं हैं। हमारे वेणुगोपाल स्वामी के मंदिर में अवधानी जी के प्रवचन मैंने सुने हैं। महाभारत का एक और नाम है, जयसंहिता अथवा जयग्रंथ।

अब रहा, दूसरे प्रश्न उत्तर। जब मरना चाहूँ तब मरने का वरदान पानेवाला भी, किसी न किसी दिन अवश्य ही मृत्यु चाहेगा, क्योंकि एक दिन वह आयेगा, जब उसे अपना जीवन दूभर लगेगा और इस दूभर जीवन से बचने का एकमात्र उपाय है, मृत्यु।''

इन उत्तरों से भुजंग शास्त्री बहुत संतुष्ट हुआ और कहने लगा, ''लता, तुम्हारे उत्तर अचूक हैं। ये उत्तर काग़ज पर लिखकर मुझे दे देना। अब रही, इस लोटे की बात। इस लोटे में घी है। नागराज की मांग है कि कल शाम तक इसे मक्खन बनाकर देना होगा।''

यह सुनते ही पूर्णिमा हताश हो गयी, क्योंकि उसे यह असंभव लग रहा था। लता बिना घबराये बोली, ''शास्त्रीजी, इस घी को अवश्य ही मैं मक्खन में बदलूँगी। कृपया कल शाम को ले जाइयेगा।''

मन ही मन भुजंग शास्त्री सोचने लगा, ''बीस साल की उम्र की यह लता घी को मक्खन में मदल देगी? भला यह कैसे संभव है?'' मन ही यों सोचते हुए वह वहाँ से चला गया।

लता ने उस रात को चांदी के लोटे से घी निकाला और मूँग की दाल के आटे को उसमें मिलाकर स्वादिष्ट पुए बनाये और दूसरे दिन बेचा। उन पैसों से उसने मक्खन खरीदा और लोटे में भर दिया।

दूसरे दिन शाम को भुजंग शास्त्री आया। लता ने सब कुछ बता दिया और मक्खन से भरा लोटा उसके सुपुर्द कर दिया। शास्त्री ने आश्चर्य होकर कहा, ''उस बड़े घर की बहू बनने के सारे लक्षण तुममें हैं।'' उसने लता की अक़्लमंदी की भरपूर प्रशंसा की और शहर चला गया। नागराज के पूछे सवालों के जवाबों के साथ मक्खन से भरा लोटा भी उसे दिया।

नागराज बेहद खुश हुआ। ऐसी होशियार और चुस्त लड़की का रिश्ता ले आने के लिए उसने भुजंग शास्त्री की तारीफ़ की और सपरिवार पूर्णिमा के घर गया। लता और नागराज के बड़े बेटे ने एक-दूसरे को बहुत पसंद किया और फिर एक महीना पूरा होने के पहले ही उनका विवाह बड़े धूमधाम से संपन्न हो गया।

समाचार झलक

मंत्र सार्थक बन गये

जब पुरोहित घरों में या अन्य स्थानों पर किसी अनुष्ठान के समय मंत्रोच्चारण करते हैं तब श्रोतागण शायद ही मंत्र को दुहराते हैं, क्योंकि वे श्लोकों के शब्दों से अपरिचित रहते हैं। वे उनके अर्थ तथा महत्व से भी अनभिज्ञ रहते हैं। अब धीरे-धीरे परिवर्तन आ रहा है। पुणे की एक संस्था ज्ञान प्रबोधिनी ने पुरोहितों को इस प्रकार प्रशिक्षित किया है कि वे प्रत्येक मंत्र के प्रसंग की व्याख्या कर सकें। संस्था ने कुछ पुस्तिकाओं का भी प्रकाशन किया है जो श्लोकों को समझने तथा प्रशिक्षित पुरोहितों के साथ-साथ उनके समवेत उच्चारण में सहायता करती हैं। इस प्रकार श्रोताओं में पूर्ण भागीदारी का एहसास होता है चाहे अनुष्ठान का अवसर गृह-प्रवेश, नामकरण संस्कार, विवाह, यज्ञोपवीत का हो या अंतिम दाह संस्कार का हो। यह परिवर्तन जोर पकड़ रहा है और डॉक्टरों, इंजीनियरों तथा वकीलों ने भी इन प्रशिक्षण कक्षाओं में शामिल होना आरंभ कर दिया है।

कृतज्ञता ज्ञापन

जेम्स हैरिसन १५ वर्ष का था जब उसे प्राण रक्षा के लिए रक्त आधान की आवश्यकता पड़ गई। यह ५१ वर्ष पहले की बात है। उसने कृतज्ञता ज्ञापन के लिए स्वयं रक्तदान करने का निश्चय किया जो सचमुच बड़ी ज़रूरत की चीज़ है। वह आस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स राज्य में रेडक्रॉस कार्यालय में ८०० बार गया और ४८० लि. रक्त उसने दिया। गिनिज बुक द्वारा इसे विश्व रेकार्ड माना गया है।
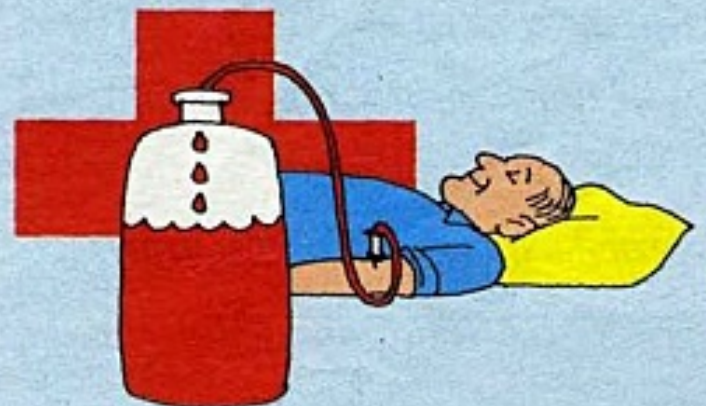
उत्तर प्रदेश की एक लोक कथा

उत्तर प्रदेश इन्द्रधनुष की भूमि है और भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से नानाविध है। उत्तर प्रदेश पौराणिक काल से ही लोकप्रिय रहा है। इसी भूमि पर भगवान राम और भगवान कृष्ण अवतीर्ण हुए। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर भी इस स्थान से जुड़े रहे हैं। यह भारतीय शासकों – ज़ैसे अशोक, हर्ष तथा मुगल सम्राटों के कारण ऐतिहासिक घटना चक्रों का केंद्र भी रहा है।

उत्तर प्रदेश २, ३६, २८६ वर्ग कि.मी. में फैला भारत का चौथा सबसे बड़ा राज्य है। यहाँ की जनसंख्या १६ करोड़ ६० लाख ५२ हजार ८ सौ ५९ है। इसके पूरब में बिहार, दक्षिण में मध्य प्रदेश, पश्चिम में राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश तथा हरयाणा और उत्तर में उत्तरांचल व नेपाल हैं।

दो पवित्र नदियाँ – गंगा और यमुना राज्य में से होती हुई बहती हैं। अन्य मुख्य नदियाँ हैं – गोमती, रामगंगा तथा घाघरा। राज्य की राजधानी लखनऊ है।

अब्दुल्ला और भूत

सुलतानपुर गाँव में अब्दुल्ला नाम का एक लड़का रहता था।वह बारह वर्ष का था। उसके बाल घुंघराले थे और उसकी मुस्कान बड़ी चित्ताकर्षक थी। वह हर घर के लिए बड़ा उपयोगी था और पड़ोसियों की सहायता के लिए हमेशा तैयार रहता था। वह उनके घरों में सामान पहुँचाता था, उनके लिए पंसारी की चीजें खरीदता था, उनकी दुकानें संभालता था और कई दूसरे फुटकर काम कर दिया करता था।

हरेक व्यक्ति उसकी सहायता के बदले उसे कुछ पैसे दे दिया करता था।

पहले तो अब्दुल्ला को पता नहीं चला कि जेब के पैसे से वह क्या करे। बाद में वह उन पैसों को मिठाई और भोजन पर खर्च करने लगा। जब उसका जी खाने से भर गया तब वह किसी और चीज के प्रति आकर्षित होने लगा। इसलिए वह अब खिलौने खरीदने लगा। पहले उसने कुछ

ताजमहल

आगरा के ताजमहल को प्रायः अब तक के बने स्मारकों में सबसे सुंदर माना जाता है। संगमरमर पत्थर से निर्मित यह उत्कृष्ट कीर्ति स्तम्भ ताजमहल आधुनिक विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है।

सम्राट शाहजहाँ ने ताजमहल को अपनी प्रिय पत्नी मुमताज महल की याद में निर्मित कराया था। इसे मुमताज महल के शव को रखने के लिए मकबरे के रूप में बनाया गया था। जब सन् १६६६ में शाहजहाँ की मृत्यु हो गई तो उसे भी उसी में दफनाया गया।

ताजमहल यमुना नदी के किनारे बना हुआ है। इसकी संपूर्ण संरचना श्वेत संगमरमर पत्थर से निर्मित की गई है। इसके निर्माण में २२ वर्ष लगे और २० हजार मजदूरों की सहायता से इसका निर्माण सन् १६४८ में पूरा हुआ।

इस स्मारक की वास्तुकलात्मक रूपरेखा ऐरबेस्क शैली में बनाई गई है, जिसमें हरेक इकाई स्वतंत्र रूप से खड़ी रह सकती है, फिर भी पूरी संरचना में दूसरे भागों के साथ भी पूरी तरह अनुरूप बैठती है।

संपूर्ण संरचना (आंतरिक और बाह्य) फूलों की जड़ाऊ रूपरेखाओं तथा गोमेद व सूर्यकान्त जैसे अल्पमूल्य के पत्थरों पर खुदे हुए सुलेखों से सुसज्जित है। इसके मुख्य तोरणद्वार, जिन पर कुरान शरीफ़ की आयतें तथा फूलों के पैटर्न उत्कीर्ण हैं, अनायास ही मन को मोह लेते हैं।

खिलौनों के बिना नहीं रह सकता था। उसकी हालत ऐसी हो गई थी कि नये खिलौनों के पैसों के लिए वह कुछ भी कर सकता था।

सुलतान पुर में शैतान लड़कों की कमी नहीं थी। वे अब्दुल्ला की खिलौनों की सनक के बारे में जान गये थे। उन्होंने इसलिए उससे मजाक करने का निश्चय किया। वे अब्दुल्ला के पास जाकर बोले, ''भाईजान! गाँव के तालाबके पास भूतबंगले की याद है न तुम्हें? यदि तुम उसमें एक रात बिताने को राजी हो जाओ तो हमलोग तुम्हें एक सौ रुपये देंगे और रात के लिए खाना भी दे देंगे। क्या तुम्हें यह चुनौती मंजूर है?''

अब्दुल्ला रोमांचित हो गया। ''वाह, कितनी आसानी से पैसा मिल रहा है!'' उसने सोचा। फिर वह बोला, ''मुझे खिलौने खरीदने के लिए कुछ पैसे दे दो तो मैं दोज़ख जाने को भी तैयार हूँ।''

उस रात लड़कों ने उसे कपड़े की एक गठरी

दी जिसमें उसके लिए खाना था। उन लोगों नेउसे एक सौ रु. का नोट भी दिखाया जो उसे भूत बंगले में रात भर रहने पर दिया जानेवाला था। फिर वे उसे भूत बंगले में ले गये।

अब्दुल्ला अपने साथ कुछ खिलौने ले गया था। उसने उन्हें अपने चारों ओर सजा दिया और उनसे खेलने लगा। रात जैसे-जैसे गहरी होती गई, वैसे वैसे वह खिलौनों में इतना खोता चला गया कि उसके आसपास क्या हो रहा है उसे पता नहीं चला।

अब, वह भूत बंगला वास्तव में चार भूतों का बसेरा था। वे बड़े शैतान भूत थे और उन्हें गलती से रात बिताने के लिए उसमें आनेवालों को डराने में बड़ा मज़ा आता था। आधी रात को भूत बाहर निकल आते थे और विलाप करने लगते थे। लोग इनकी आवाज सुनकर चीखते-चिल्लाते बाहर निकल आते थे और अपने सामान वहीं छोड़ जाते थे। भूत खुश होकर हँसने लगते और इस बात पर लड़ने-झगड़ने लगते कि सबसे ज्यादा डरावना इनमें कौन था। इसलिए जब अब्दुल्ला उस घर में घुसा तब उन सब ने इस आशा से बड़े खुश होकर अपने हाथ मिलाये कि लड़का भय से चीखता-चिल्लाता भाग जायेगा।

आप उन सबके आश्चर्य की कल्पना कीजिए जब उन्होंने देखा कि लड़का घर में और इसके गिर्द गिर्द के वातावरण में कोई दिलचस्पी नहीं ले रहा है। भूत पहले तो परेशान हो गये, फिर उन्हें इस बात पर गुस्सा आ गया कि उनकी शांति और उनका एकांत भंग हो गया था। वे फुर्ती से उसके कमरे से होकर गुजरे। उन्होंने देखा कि अब्दुल्ला खंभे से लग कर बैठा है। वे उसके चारों ओर घूमने लगे, तरह-तरह से मुँह बनाने लगे और उसका ध्यान खींचने की कोशिश करने लगे।

एक भूत अब्दुल्ला के पास गया और भय से चीखा। अब्दुल्ला की आँखें खुली थीं। लेकिन उसने कुछ ध्यान नहीं दिया। भूतों ने सोचा कि

हस्तकला
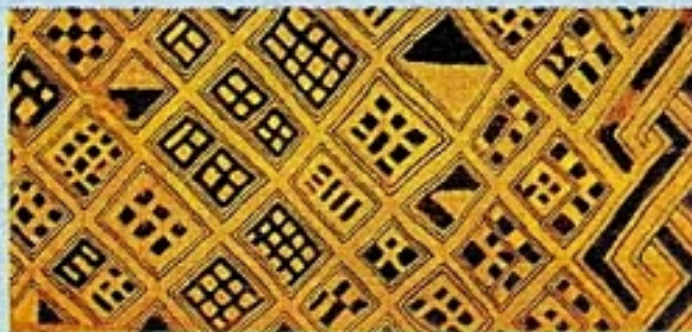
उत्तर-प्रदेश अपनी हस्तकलाओं के लिए प्रसिद्ध है। राज्य में बाँस की बुनावट बहुत लोकप्रिय है। बाँस से टोकरियाँ, ट्रे, फर्नीचर तथा दीवार में लटकानेवाले चित्र बनाये जाते हैं। बाँस का स्थानीय नाम रफिया है। नदी किनारे इसकी खेती की जाती है।

धातु-अलंकरण यहाँ का दूसरा लोकप्रिय हस्त शिल्प है। मुरादाबाद धातु शिल्प का पर्याय बन गया है। यह रंगीन मीनाकारी तथा जटिल उत्कीर्णन के लिए प्रसिद्ध है।

राज्य के अन्य लोकप्रिय शिल्प हैं - काष्ठ शिल्प, प्रस्तर-शिल्प, लाख के आभूषण तथा चूड़ियाँ, हाथी के दाँत पर उत्कीर्णन तथा खिलौना बनाना।

वह ध्यान में मग्न है। वास्तव में अब्दुल्ला अपने खिलौनों के साथ मस्त था।

लगभग उसी समय उसने भूख महसूस किया। अंधेरे में दोस्तों का दिया गया खाने का गट्ठर वह ढूँढ़ने लगा। उसके हाथ टटोलते-टटोलते आखिर उस गट्ठर पर पड़ गये। ''अहा ! टॉप नॉट, सबसे पहले तुम्हारी खबर लूँगा,'' कपड़े का गट्ठर खोलते हुए उसने अपना उद्‌गार प्रकट किया।

फिर उसके हाथ चावल के केक पर पड़े। उसने उसे निकालते हुए कहा, ''मैं तुम्हें यूं ही निगल जाऊँगा, फैटी !'' और उसे वह चुपचाप चबा गया। अब उसकी ढूँढ़ती उंगलियों को एक उबला हुआ अंडा मिल गया। उसने उसे प्यार से हाथों से सहलाया और कहा, ''बॉल्ड हेड, अब तुम्हारी बारी है !'' आखिर में उसे रुखी रोटी का एक टुकड़ा मिला। उसने उससे कहा, ''ओ, तो तुम हो फ्लरी फर ! मैं तुम्हें भी छोड़नेवाला नहीं हूँ!'' फिर उसने उसे भी चट कर लिया। लेकिन फिर भी उसकी भूख नहीं मिटी। इसलिए वह दोस्तों पर भुनभुनाता रहा कि उन सब ने उसके लिए काफी खाना क्यों नहीं रखा था। फिर वह लेट गया और गहरी नींद में खर्राटे भरने लगा।

चारों भूत, जो अब्दुल्ला की बातों को सुन रहे थे, डर से थर-थर काँपने लगे। एक विचित्र संयोग कहिये कि चारों भूतों के वे ही नाम निकले जिन्हें खाते समय उसने संबोधित किया था - टॉप नॉट, फैटी, बॉल्ड हेड तथा फ्लरी फर ! भूतों ने सोचा कि अब्दुल्ला उन्हें खा जाना चाहता है। उन सबने एक दूसरे से कहा, ''वह कोई मामूली इनसान नहीं है। वह हम में से हरेक को नाम से

जानता है। क्यों नहीं हम से अपने लूट के माल से खुश करने की कोशिश करें। शायद तब वह हमें छोड़ दे !''

वे तब अपने कमरों में गये और वर्षों से लूटे गये सोने-चाँदी का ढेर ले आये। उन सबने यह सब अब्दुल्ला के सामने रखकर कहा, ''महोदय, कृपया यह सब स्वीकार करके हमारी जान बख्श दीजिए।''

अब्दुल्ला, जो गहरी नींद में था और भोजन का सपना देख रहा था, उनकी बातों को सुन न सका। वह भूखा था और उसका पेट जोर-जोर से गुर्रा रहा था। करवटें बदलता हुआ वह जोर से बड़बड़ाया, ''नहीं, इससे काम नहीं चलेगा। मैं बहुत भूखा हूँ। जहाँ-जहाँ मेरा हाथ पड़ेगा, मैं सब खा जाऊँगा।''

इन शब्दों को सुनकर भूत भयभीत हो गये। वे घर छोड़कर भाग गये और तब तक नहीं रुके जब तक वे गाँव के पार नहीं चले गये।

सवेरे, अब्दुल्ला ने नींद से जाग कर अपने चारों ओर देखा। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसके चारों ओर खजाना है। चमकते सोने और चाँदी ! रात में क्या हुआ उसे कुछ नहीं मालूम था। उसने सिर्फ इतना ही अनुभव किया कि उसने एक भूत बंगले में रात बिताई, लेकिन किसी ने उसकी नींद में खलल नहीं डाली।

धीरे-धीरे अब्दुल्ला ने महसूस किया कि पिछली रात वह कितना भाग्यशाली था। उसने अपने प्राणों की रक्षा के लिए अल्लाह को शुक्रिया अदा की। वह धन लेकर अपने घर गया और अपने दोस्तों को बुलाया। उसने उनसे कहा कि वह अब से एक नई जिन्दगी शुरू कर रहा है। उसकी खिलौनों की सनक खत्म हो गई और वह एक बड़े जिम्मेदार आदमी की तरह व्यवहार करने लगा।

गाँववाले भी उसमें बदलाव देखकर बहुत खुश हुए। और उन्होंने सोचा कि कुछ सालों के बाद वह शहर का एक अच्छा मेयर बन सकेगा। अब्दुल्ला ने इसे अपना सम्मान समझा।
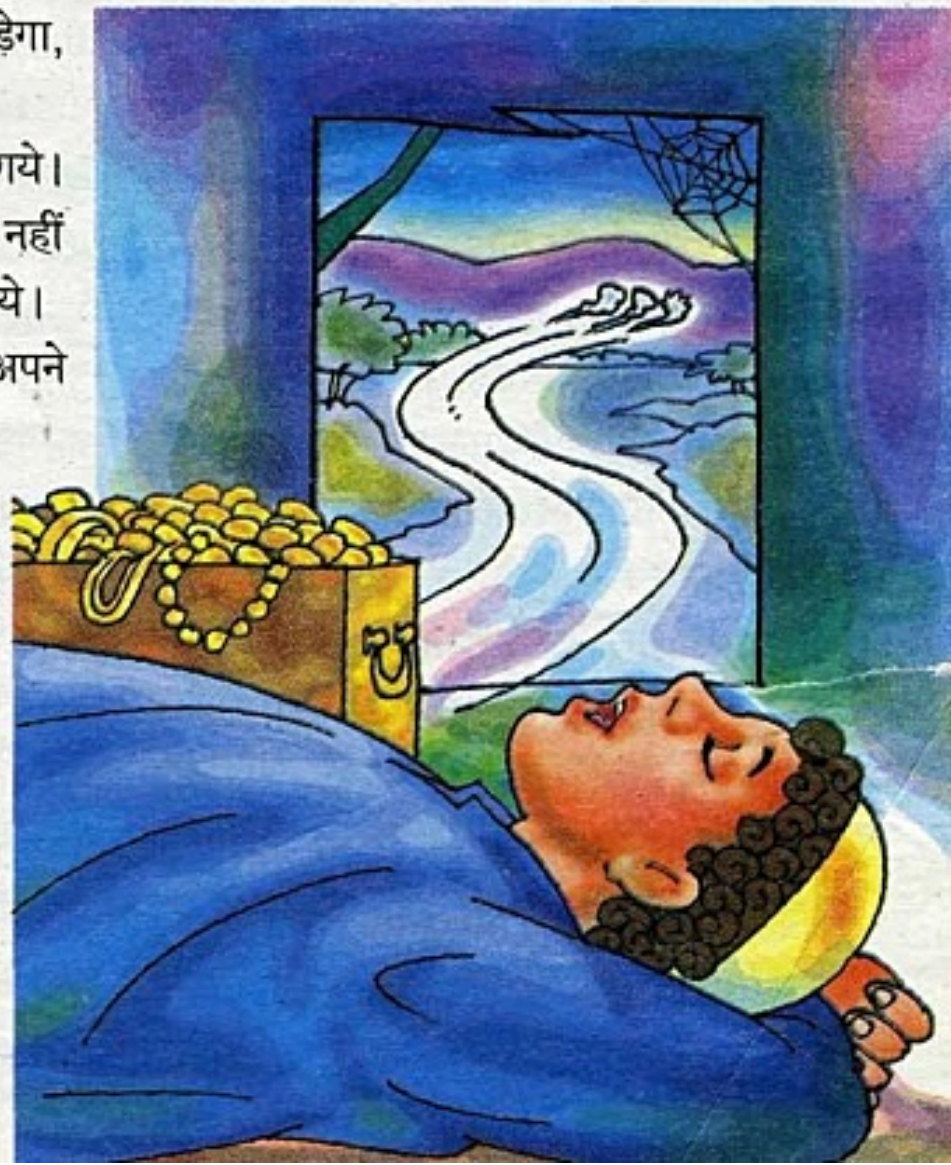
पिशाचिनों की संपदाएँ

पर्वतों के पास के ग्रामवासियों को शहर जाने के लिए जंगल के रास्ते से ही जाना पड़ता था। दूसरा रास्ता कोई था ही नहीं। बहादुर यह सोचकर एक ज़रूरी काम पर शहर निकला था कि काम के पूरा होने में कम से कम दो दिन लगेंगे। पर उस दिन दुपहर तक ही काम पूरा हो गया। इसलिए वह अंधेरा छा जाने के पहले ही घर लौटने के लिए निकल पड़ा।

जब वह जंगल के रास्ते से गुज़र रहा था तब ज़ोर की बारिश होने लगी। बारिश के रुक जाने के बाद जब वह निकला, तब तक अंधेरा छा गया और उसे तरह-तरह के जानवरों की चिल्लाहटें सुनायी पड़ने लगीं। उसे लगने लगा कि अब जंगल में यात्रा करने में खतरा ही खतरा है। उसने वहाँ एक उजड़ा शिव का मंदिर देखा तो रात वहीं गुज़ारने का उसने निश्चय कर लिया। जब वह मंदिर के निकट आया तो उसे सांपों के फुफकार सुनायी पड़े। अब उसने मंदिर के अंदर जाने का विचार त्याग दिया और पास ही के एक बरगद के पेड़ पर चढ़ गया।

थोड़ी देर बाद जब वह वहीं झपकी ले रहा था तब उसे पेड़ के नीचे कोलाहल सुनायी पड़ा। बहादुर ने आँखें खोलकर नीचे देखा। उसने देखा कि पेड़ के नीचे कुछ पिशाचिनें आराम से बैठी हुई हैं। उन्हें देखते ही अनायास वह चीख पड़नेवाला ही था कि अपने को काबू में रख लिया और विस्मय-भरे नेत्रों से नीचे देखता रहा।

शायद वह पिशाचिनों की नायिका थी जो अलग एक टीले पर बैठी हुई थी। बाकी पिशाचिनें चुपचाप उसके पैरों के पास बैठी हुई थीं। नायिका पिशाचिन दूसरी पिशाचिनों से कहने लगी, "अब जो-जो संपदाएँ तुम ले आयी हो, दिखाना।" जब एक पिशाचिनी ने अपनी थैली खोलकर

- नरोत्तम -

दिखायी तो नायिका की आँखें चमक उठीं और कहा, ''अद्भुत''।

दूसरी पिशाचिनी ने अपनी थैली खोलकर दिखायी तो नायिका के मुँह से अनायास ही निकल पड़ा, ''वाह''।

फिर नायिका पिशाचिन ने शेष पिशाचिनियों से कहा, ''तुम अपूर्व संपदाएँ ले आयी हो। इसे पाने के लिए तुमने बड़ी मेहनत की होगी। हम इस संपदा को बरगद के कोटर में छिपा देंगी। कल रात को हमारी मुलाक़ात फिर यहीं होगी।''

नायिका के हुक्म के मुताबिक पिशाचिनियों ने थैलियाँ कोटर में छिपा दीं। फिर वे कूदती-फांदती वहाँ से चलती बनीं।

सबेरे बहादुर पेड़ से नीचे उतरा और पेड़ के कोटर को देखते हुए अपने आप बड़बड़ाने लगा, ''छी ! पिशाचिनों की संपदा श्मशान की राख के समान है।'' थैलियों को खोलकर देखे बिना ही वह वहाँ से निकल पड़ा। घर पहुँचने के बाद उसने अपनी पत्नी से सब बातें बतायीं। बहादुर ने जो बातें अपनी पत्नी से बतायीं, वह सब सुन लिया पड़ोसिन दुर्गा ने। उस समय वह बहादुर की पत्नी से अरहर की दाल माँगने आयी थी। वह तुरंत घर लौट आयी और अपने पति चंचल से कहने लगी, ''वह बहादुर बेवकूफ़ है, उसके दिमाग़ में मिट्टी है। तुम भी उससे कम नहीं हो। शादी हुए दस साल हो गये, पर अब भी मिट्टी के ये कंगन ही पहनती हूँ। न मेरे पास सोने के आभूषण हैं, और न रेशमी साड़ियाँ। तुरंत तुम जंगल में जाओ। वहाँ उस उजड़े शिवालय के बग़ल क़े बरगद के पेड़ के कोटर में जो थैलियाँ पिशाचिनियों ने छिपाकर रखीं हैं, उन्हें ले आओ। पता नहीं, कितनी मूल्यवान संपदायें उन थैलियों में भरी पड़ी हैं। संपदा, संपदा ही होती है। क्या कहीं मनुष्यों के लिए और पिशाचिनियों के लिए अलग-अलग संपदाएँ होती हैं?''

चंचल पत्नी की बातों में आ गया। उन संपदाओं को चुराकर लाने की इच्छा उसमें भी पैदा हो गयी। उसने पेड़ के कोटर से उन तीनों थैलियों को चुरा लिया और उन्हें लेकर रात को घर लौटा।

दुर्गा ने दरवाज़े बंद कर दिये और तुरंत एक थैली खोली। उससे निकाली एक चीज को देखते ही वह ज़ोर से चिल्ला उठी। वह आदमी का

बहुत ही सूखा कपाल था। दूसरी थैली में हड्डियाँ थीं तो तीसरी थैली में राख ही राख भरी हुई थी।

''तुम भी कैसे मूर्ख निकले? क्या तुम्हें वहीं देखना नहीं चाहिए था कि इन थैलियों में क्या है?'' यों वह पति को गालियाँ देने लगी।

बेचारा चंचल चुप रह गया। पर दुर्गा सोच में पड़ गयी। फिर थोड़ी देर बाद बोली, ''पिशाचिनें इन्हें संपदा मानती हैं। इसका यह मतलब हुआ कि वे इन्हें मूल्यवान वस्तुएँ समझती हैं। कल रात को फिर से उसी स्थल पर जाना और उनकी बातों को ध्यान से सुनना। उनसे कहना कि वे पर्याप्त धन देंगी तो ये संपदाएँ उन्हें लौटा देंगे। सौदा करना।''

दुर्गा जैसी पत्नी के साथ कितने ही सालों से चंचल पारिवारिक जीवन बिता रहा है, तो भला, पिशाचिनों से सौदा करने में उसे क्यों कर डर होगा। वह तीनों थैलियों को लेकर जंगल के उस पेड़ के पास गया और उनकी टहनियों में बैठ गया। आधी रात को पिशाचिनें वहाँ आयीं और कोटर में थैलियाँ न पाकर चिल्लाने लगीं, ''चोरी हो गयी, हमारी संपदाओं की चोरी हो गयी, किसी ने हमारी संपदाओं को लूट लिया।''

नायिका पिशाचिन ने कोटर में खुद अपना हाथ डालकर टटोला और कहा, ''बड़ा अनर्थ हो गया। मांत्रिक मुनि वराह के जीवन-काल में हम उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकीं। हमारे सारे प्रयत्न व्यर्थ हुए। उसके मरने के बाद ही सही, उसके अवशेषों को छः फुट के गड्ढे में गाड़ देना चाहती थीं और बदला लेना चाहती थीं। पर दुख की बात है कि हम यह भी नहीं कर पा रही हैं। कितनी दुर्भाग्यपूर्ण बात है।''

वह आश्चर्य के साथ सोचने लगी कि आखिर उनकी संपदाओं को कौन ले जा सकता है। उनकी संपदाएँ साधारण मनुष्यों के काम की नहीं है, इसलिए वे इन्हें नहीं ले जा सकते। जरूर यह किसी मांत्रिक-तांत्रिक का ही काम होगा।

जब वह इस प्रकार सोच रही थी तो इसी को सही मौक़ा मानते हुए चंचल ने पेड़ से उतरते हुए कहा, ''इतना दुखी क्यों होती हो? तुम्हारी मूल्यवान संपदाएँ मेरे पास हैं। यदि तुम हमें पर्याप्त धन दोगी तो तुम्हारी संपदाएँ तुम्हें लौटा दूँगा।''

चंचल के कंधे पर लटकती हुई अपनी थैलियों

को देखकर हर्ष-भरे स्वर में नायिका पिशाचिनी ने कहा, ''हमारे पास धन नहीं है, लेकिन कुछ गहने मात्र हैं, जिन्हें हम अभी-अभी ले आयी !''

''गहने, बहुत अच्छा ! मेरी पत्नी गहनों पर मरती है। गहनों के पीछे वह पागल है। गहनों के लिए ही तो रात-दिन हमें सताती रहती है। गहने उसे मिल जायें तो वह हमेशा खुश रहेगी। दो, गहनों की थैली,'' कहते हुए उसने तीनों थैलियाँ उसके सामने रख दीं।

नायिका ने गहनों की थैली उसे दे दी। थैली को खोलकर देखकर वह बहुत ही खुश होता हुआ बोला, ''बाप रे, इतने गहने ! मेरी पत्नी अब भविष्य में कभी भी गहनों के लिए मुझे नहीं सतायेगी। चलता हूँ।'' कहता हुआ थैली लेकर वह निकल पड़ा।

ठीक आधी रात के समय जब वह गाँव के पास पहुँच रहा था, तब दो पहरेदारों ने उसे देख लिया। ये शहर के कोतवाल द्वारा भेजे गये पहरेदार थे। वे जंगली प्रदेश के चोरों की तलाश में घूम रहे थे। उन्होंने चंचल को देखते ही उसे पकड़ लिया। चंचल की कोई भी बात सुनने से उन्होंने इनकार कर दिया। थैली में पाये गये गहनों को देखकर उनका संदेह और पक्का हो गया। वे उसे पकड़कर कोतवाल के पास ले गये और कोतवाल ने उसे जेल में बंद कर दिया। चंचल मन ही मन अपनी पत्नी को कोसने लगा, क्योंकि उसी के लालच के कारण उसे जेल की सज़ा भुगतनी पड़ रही थी।

उधर उसकी पत्नी दुर्गा को जब यह मालूम हुआ तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी और कहने लगी, ''मेरी दुराशा और लोभ-लालच की वजह से ही मेरे पति को ज़ेल की सज़ा भुगतनी पड़ रही है। दुराशा और लोभ-लालच भी पिशाचिनों की संपदा की तरह ही है। उस संपदा को पाना तो दूर, उसे छूने मात्र से ही ख़तरा है।''

उसने बहादुर और उसकी पत्नी की मन ही मन प्रशंसा करते हुए सोचा कि वे अपनी कमाई पर ही संतोष करने के कारण कितने सुखी हैं। उसने निश्चय किया कि भविष्य में वह भी पति की जो कमाई होगी, उसी से निर्वाह करेगी।

अपने भारत को जानो

१. ऊपर दिये गये चित्र को पहचानो। उन्होंने १९९७ में जन सेवा के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार अर्जित किया। पुरस्कार क्या था?

२. उड़ीसा के एक शहर के नाम का स्थानीय मुण्डा जन जाति की भाषा में शाब्दिक अर्थ है - जनता का क़िला। वह कौन-सा शहर है?

३. किस दक्षिण भारतीय राजवंश की राजधानी डोरासमुद्र में थी?

४. हिन्दू घरों में दरवाजों पर आम के पत्तों से तोरण बना कर लटकाने की परम्परा है। किस देवता के सम्मान में इसे किया जाता है? संकेतः उनका प्रिय फल आम है।

५. सिक्ख गणतंत्र की औपचारिक घोषणा पंजाब में एक किले से बन्दा बहादुर द्वारा की गई थी। वह क़िला कौन-सा है?

६. किस नाम से बौद्ध मठवासिनी पुकारी जाती है?

७. एक भारतीय मसाले को सूख जानेपर फारस में (अब ईरान) 'लिट्ल नेल्स' कहा जाता था। वह कौन-सा मसाला है?

८. चार द्रविड़ भाषाओं की उत्पत्ति से पहले दक्षिण भारत में संस्कृत श्लोकों को लिखने के लिए किस लिपि का प्रयोग किया जाता था?

९. अर्जुन पुरस्कार को प्राप्त करनेवाला पहला कसरती (ऐथलीट) कौन था?

१०. जब गाँधी जी नमक कानून को तोड़ने के लिए डांडी मार्च का नेतृत्व कर रहे थे, तब दक्षिण भारत में भी तिरुची से वेदारण्यम तक वैसा ही मार्च आयोजित किया गया था। इसका नेतृत्व किसने किया था?

(उत्तर अगले महीने)

नवम्बर प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. १९५०-५१
२. ब्राह्मी
३. गाँधीजी
४. रविदास
५. अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह
६. बालगंगाधर तिलक
७. पाँच बार
८. महाराष्ट्र

विघ्नेश्वर

प्रसन्नवदना और मोहना ये दोनों बहनें क्रमशः मूर्तियों को देखते आगे बढ़ीं। आखिर वे निराश हो लौटने को थीं, इतने में बाहर बच्चों का कोलाहल देख अचरज में आकर ठिठक गईं।

उसी वक़्त उन्हें यह कंठ स्वर सुनाई दिया, ''वहाँ पर कम मूल्यवाले रंगों से सुसज्जित एक प्रतिमा है। उसको भी देखने क्यों नहीं जातीं?''

ये बातें सुन मोहना बोली, ''चलो, दीदी! वह प्रतिमा शायद कम दाम में मिलने वाली है।'' यों कहकर वह प्रसन्नवदना का हाथ पकड़ करके आगे बढ़ी। इस पर प्रदर्शनशाला में उपस्थित स्त्री-पुरुष सब उनके पीछे हो लिये।

प्रसन्नवदना ने मुद्राओं की थैली प्रतिमा के सामने रख दी, अपने कंठ में सुशोभित मरकत रत्नहार को उतारा और सर झुकाये बैठे हुए विचित्र के हाथ में कंगण की तरह लपेट दिया।

उस घटना को देख लोग आश्चर्य में आ गये और आपस में कानाफूसी करने लगे, ''लगता है कि ये दोनों युवतियाँ पागल हैं। वरना वहाँ पर रखी हुई अपूर्व प्रतिमाओं को छोड़ यहाँ पर रखी साधारण प्रतिमा पर अपना धन क्यों उंडेल देतीं?''

इस पर प्रसन्नवदना उन लोगों की शंका को दूर करती हुई बोली, ''यहाँ पर प्रतिष्ठित मूर्ति में जिस विशेषता को देख बच्चे मुग्ध हो रहे हैं, उसी विशेषता ने हमें भी उसकी ओर आकृष्ट किया है। कहा जाता है कि बच्चे देवताओं के समान होते हैं और उनके आशीर्वाद ब्रह्मा के आशीर्वाद जैसे हैं। इसीलिए हमने उनके चुनाव को स्वीकार कर लिया है।''

२४. महाभारत की रचना

उठा। उसका अपना असली नाम भी स्मरण हो आया।

बाप-बेटे को कई वर्षों के बाद मिलते देख प्रसन्नवदना संतुष्ट हो बोली, ''हमारी कामना पूरी हो गई। हम अपनी मनौती पूरी करेंगे।''

इसके बाद तुरन्त लोगों ने पंडाल बनाया और मंच तैयार किया। प्रसन्नवदना विनायक की प्रतिमा के पास बैठे ताल देती हुई ''तांडव नृत्य करी गजानन...'' नामक कीर्तन गाने लगी। मंच पर मोहना विद्युल्लता की भांति नाचने लगी। उस दृश्य को देख जनता तन्मय हो आनंद सागर में गोते लगाने लगी।

मोहना बोली, ''मृत्तिका शिल्प में जो रूप-सौंदर्य और शोभा को प्रतिबिंबित न कर पाये, उसे चूने, कोयले, लाख आदि रंगों से मूर्तिभूत करनेवाले चित्रकार की प्रतिमा अपूर्व है। इस सुंदर प्रतिमा के हमारा पुरस्कार थोड़ा है।''

उसी समय विचित्र के बृद्ध माता-पिता वहाँ पर आ पहुँचे। वे बोले, ''बेटा पावन, वातापि गणेशजी की कृपा से हमारी खोज सफल हुई है। तुम इतने बड़े होने के बाद हमें दिखायी दे रहे हो।'' इन शब्दों के साथ अपने पुत्र के साथ आलिंगन करके वे दोनों माता-पिता आनंद-विभोर हो गये।

अब विचित्र भी बाल्यावस्था को पार कर यौवनावस्था में प्रवेश कर रहा था। वह भी अपने माता-पिता को देख बहुत ही आनंदित हुआ। उसे अपना सारा भूत कालीन जीवन याद हो

प्रसन्नवदना का कीर्तन गजानन पंडित को सुनाई पड़ा। उस समय गजानन पंडित की आयु सौ साल से ज्यादा हो चुकी थी और वह अपने घर से बाहर निकलने व यहाँ तक कि हिलने की हालत में न था। फिर भी उसे न मालूम हुआ, कहाँ से अपूर्व ताक़त प्राप्त हुई कि दौड़कर वह पंडाल में पहुँचा। प्रसन्नवदना को हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और साष्टांग की मुद्रा में ध्यान मग्न हो गया।

नृत्य करते-करते मोहना ने तन्मयता की अवस्था में विनायक की भारी प्रतिमा को बड़ी आसानी से अपने कंधे पर उठा लिया। उसे देख जनता चौंक पड़ी और मोहना को समझाने लगी, ''बहन, तुम इतना भारी बोझ उठा न सकोगी।'' इसके जवाब में मोहना बोली, ''यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं है।'' ये शब्द कहकर मूर्ति

को उठाये वह नृत्य मुद्रा में निकल पड़ी। सारी जनता उसके पीछे चल पड़ी। उस कोलाहल में किसी को पता न चला कि प्रसन्नवदना कब गायब हो गई।

ध्यान मुद्रा से गजानन ने आँखें खोलीं; सामने मूर्ति की जगह स्वर्ण मुद्राओं से भरी सोने की जरीदार थैली दिखाई दी। उसके चरणों के पास कलाकार विचित्र घुटने टेक बैठा हुआ था।

गजानन पंडित विचित्र से बाला, ''तुम मंदिर के मण्डप की दीवारों पर गणेश की लीलाओं को अंकित कर दो ! इसके लिए आवश्यक धन प्रसन्नवदनवाले विघ्नेश्वर ने दे दिया है न?''

इसके बाद गजानन पंडित विचित्र को लेकर जुलूस के साथ चल पड़ा।

मोहना उस मूर्ति को लेकर मंदिर के तड़ाग के पास पहुँची, तड़ाग की सीढ़ियों पर उतरते हुए अचानक गायब हो गई और एक चूहा मूर्ति को अपनी पीठ पर ढोते हुए पानी के भीतर दौड़ पड़ा। उसी दिन सभी प्रतिमाओं को जलविसर्जन उत्सव मनाया जानेवाला था।

मूर्ति के तड़ाग के मध्य पहुँचने पर वह करोड़ों पूर्णिमाओं जैसे प्रकाश पुंज से शोभित थी। प्रकाश के भीतर अभय हस्त की मुद्रा में विघ्नेश्वर सब को दर्शन देकर अंतर्धान हो गये।

गजानन पंडित विचित्र को अपने आलिंगन में लेकर बोला, ''बेटा पावन ! तुम्हारी वजह से बातापि नगर को पावनता प्राप्त हुई। इसलिए आज से तुम पावन मिश्र कहलाओगे।''

पावनमिश्र आगे बोला, ''गर्भ गृह के मुखद्वार पर महाभारत की रचना वाला जो चित्र है...'' पावन मिश्र की बात अभी पूरी न हो पाई थी कि युवा चित्रकार बोल उठा, ''गुरु देव !'' फिर पावन मिश्र के चरणों पर प्रणाम करके बोला, ''आपके पावन चरित को सुन मैं धन्य हो गया हूँ। मेरा नाम आनंद है। आपके पावन नाम वाले प्रथम दो अक्षरों को बदलकर अपने नाम के पहले जोड़कर मैं ''वपानंद'' कहलाऊँगा। यह मण्डप पावन चित्रालय है। इस पावन मण्डप के चित्रों की प्रतिकृतियों की मैं रचना करूँगा। आनेवाली पीढ़ियों के लिए आपने जो कहानियाँ सुनाईं, वे सब उन्हें सुनाऊँगा। मुझ पर अनुग्रह कीजिए।''

वृद्ध पावन मिश्र उस युवक के सर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए मंदहास करके पुनः सुनाने लगा, ''व्यास मुनि महाभारत की जो कथा सुनानेवाले थे, उसे लिखने की सामर्थ्य रखनेवाले कौन हो सकते हैं, इस बात पर वे विचार कर ही रहे थे कि ब्रह्मा ने प्रकट होकर उन्हें विघ्नेश्वर को लेखक बनाने का सुझाव दिया। ब्रह्मा के आदेशानुसार व्यास मुनि ने विघ्नेश्वर से प्रार्थना की।

विघ्नेश्वर ने प्रसन्न होकर कहा, ''व्यास महर्षि, आप अपने ढंग से कथा सुनाते जाइये, लेकिन मेरी शर्त यह रहेगी कि आप भूल से भी मेरी ओर मत देखियेगा।'' यों जवाब देकर गणेशजी महाभारत की कथा लिखने बैठ गये।

इसके बाद विघ्नेश्वर अपने दंत के टुकड़े को लेखनी बनाकर बराबर लिखते गये। व्यास मुनि अर्ध निमीलित नेत्रों के साथ ध्यान मग्न हो धाराप्रवाह सुनाने लगे।

सामने हिमालय की चोटी से गिरने वाला जल प्रपात मध्यमावती राग जैसे मंद्र गंभीर स्वर में नेपथ्य संगीत की भांति शृति मिला रहा था। देवदारु वृक्ष सर हिला रहे थे। महाभारत की रचना चलने लगी।

जन्मांध धृतराष्ट्र हस्तिनापुर की गद्दी पर बैठे। उनके छोटे भाई पांडु राजा साम्राज्य की जिम्मेदारी निभाते राज्य का विस्तार करने लगे। कालांतर में राजा पांडु के पाँच पुत्र और धृतराष्ट्र के सौ पुत्र-कौरव पैदा हुए। बचपन से ही पांडव और कौरवों के बीच ईर्ष्या बढ़ती गई।

मय सभा में अपमानित हो दुर्योधन ने बदला लेने के विचार से द्युतक्रीड़ा में पांडव और उनकी

पत्नी द्रौपदी को जीत लिया और द्रौपदी का चीर हरण करने का निश्चय किया। इस पर क्रोध में आकर भीमसेन ने दुर्योधन की जांघ तोड़ने तथा दुश्शासन का खून पी जाने की धमकी दी।

पांडव वनवास समाप्त करके राजा विराट के दरबार में अज्ञातवास करने लगे। सैरंध्री के रूप में रहनेवाली द्रौपदी का कीचक ने अपमान किया और भीमसेन के हाथों जान खो बैठा। उत्तर गोहरण में बृहन्नला ने कौरव सेनाओं को मार भगाया।

इसके बाद अभिमन्यु और उत्तरा का विवाह हुआ। कृष्ण ने दूत कार्य करके पांडवों के लिए पाँच गाँवों की माँग की, पर दुर्योधन ने सूई की नोक के बराबर भी ज़मीन देने से इनकार कर दिया।

आख़िर युद्ध अनिवार्य हो गया। श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी बने। अर्जुन को भगवद् गीता का उपदेश दिया।

भीष्म शर शय्या पर पहुँचे। द्रोणाचार्य ने पद्मव्यूह की रचना की। सभी कौरवों ने मिलकर अन्यायपूर्वक अभिमन्यु का वध किया।

अर्जुन ने अपने शौर्य और प्रताप का परिचय दिया। धृष्टद्युम्न ने द्रोण का सर काट डाला। उधर दुर्योधन कर्ण के बल-पराक्रम पर निर्भर था, लेकिन कर्ण की मृत्यु के बाद वह भी निराशा से भर उठा। भीम ने दुश्शासन का वध किया और दुर्योधन की जांघ तोड़ डाली।

जूए में पराजित युधिष्ठिर ने अपने भाइयों

की मदद से भीषण युद्ध करके कौरवों पर विजय प्राप्त कर विजय दुंदुभी बजाई।

श्रीकृष्ण ने अपना अवतार समाप्त किया।

परीक्षित का राज्याभिषेक करके पांडव द्रौपदी के साथ महाप्रस्थान पर चल पड़े।

धर्म की मौत नहीं होती, आख़िर धर्म की ही विजय होती है। इस सत्य को साबित करने के लिए शायद युधिष्ठिर मेरु शिखर पर खड़े हो गये।

जल प्रताप की ध्वनि क्षीण होती गई, ऐसा लग रहा था कि यह बताना मुश्किल है कि व्यास की बताई गई कथा विघ्नेश्वर लिख रहे हैं या विघ्नेश्वर के द्वारा लिखी जानेवाली कथा व्यास कहते जा रहे हैं? तेजी के साथ महाभारत की रचना चल रही थी।

उधर सत्य लोक में ब्रह्मा ने पद्मासन पर आसीन हो संतुष्टि के साथ मुस्कुराते हुए सरस्वती

की ओर सार्थक दृष्टि प्रसारित की। दूसरे ही क्षण सरस्वती ने वीणा की तंत्रियों को झंकृत कर श्रीराग का आलाप करना शुरू किया।

महाभारत की कथा समाप्त होने को थी; अंतिम पर्व की रचना चल रही थी।

सरस्वती देवी के द्वारा सत्य लोक से मंगलाचरण के रूप में श्रीराग का आलाप करनेवाला प्रसंग व्यास महर्षि को विघ्न मालूम होने लगा।

कथा की रचना अभी शेष थी। व्यास मुनि ने अन्य मनस्क हो लेखक की ओर देखा; दूसरे ही क्षण विघ्नेश्वर अंतर्धान हो गये।

महाभारत ग्रंथ पर आसमान से अक्षतों की भांति झर झर फूल गिर गये।

व्यास मुनि ने ग्रंथ को खोल कर बड़ी आतुरता के साथ देखा। उन्हें जो कुछ बताना शेष था, वह सब अक्षरशःपूर्ण रूप से लिखा गया था। व्यास आनंद और आश्चर्य के साथ पुलकित हो रहे थे, तभी महती वीणा पर हंस ध्वनि का राग सुनाई दिया।

नारद मुनि ने प्रवेश करते ही पूछा, "महाभारत के महर्षि, आश्चर्य के साथ आप यह क्या देख रहे हैं?"

व्यास मुनि ने सारी घटना सुना दी।

"इसका मतलब है कि आप जो कुछ बताना चाहते थे, उसके बताने के पहले ही लेखक लिखते गये हैं न?" नारद ने पूछा।

"जी हाँ, नारद, यही हुआ है। कठोर तपस्या करने के बावजूद ऐसे लेखक किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकते। मैं धन्य हो गया! मेरा संकल्प सफल हो गया! इसलिए मैं महाभारत को 'जय' भी कहूँगा।" इन शब्दों के साथ व्यास मुनि ने हाथ जोड़कर विघ्नेश्वर का ध्यान किया।

महाभारत के निकट एक विशाल ज्योति बढ़ती गई।इस पर बिघ्नेश्वर ने प्रत्यक्ष होकर कहा; "व्यास महर्षि! आपका महाकाव्य पंचम वेद बनकर एक अपूर्व काव्य के रूप में सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त करेगा।" यों आशीर्वाद देकर वे अंतर्धान हो गये।

(समाप्त)

खून का रिश्ता

बलिया नामक गाँव में बलराम नामक एक गरीब जवान रहा करता था। उसका अपना कोई नहीं था। मज़दूरी करता था और पेट भरता था। रात में जहाँ नींद आती, सो जाता था।

एक रात को वह मेदरा के घर के चबूतरे पर लेटा हुआ था। नींद न आने की वजह से वह करवटें बदल रहा था। उस समय एक युवती वहाँ आयी और पास के दूसरे चबूतरे पर बैठ गयी। उसने वहाँ बैठते ही एक गठरी खोली और खाने की कोई चीज़ उस गठरी में से निकाल कर जल्दी-जल्दी खाने लगी।

बलराम उसे देखकर डर गया। उसे लगा, वह कोई पिशाचनी है। डर के मारे उसने आँखें बंद कर लीं। पर थोड़ी ही देर में उसने अपने को संभाला और आँख खोलते हुए पूछा, ''तुम कौन हो?''

वह युवती चौंक उठी और धीमे स्वर में कहा, ''मैं मनोहर की बेटी हूँ।''

''आधी रात को यहाँ क्यों आयी?'' बलराम ने कड़े स्वर में पूछा।

युवती ने सकमकाते हुए कहा, ''मैं यह नहीं जानती कि तुम इस गाँव के ही हो, या नहीं। मेरी माँ की मौत के बाद मेरे पिता ने दूसरी शादी कर ली। मेरी सौतेली माँ चुड़ैल है। खाना नहीं देती, बात-बात पर मुझे कोसती रहती है, घर का पूरा काम मुझसे ही कराती है। आज मेरे पिता और मेरी सौतेली माँ किसी काम पर बाहर गये हुए हैं। मुझे मालूम नहीं, किस क्षण वह आ टपकेगी, इसलिए घर में पड़े पुए खा रही हूँ।''

इस पर बलराम ने हँसते हुए कहा, ''तुम्हारी सौतेली माँ को सबेरे ही पता लग जायेगा कि किसी ने चंद पुए खा लिये और उन्हें खानेवाली तुम्हीं हो। तब तुम्हें ज़रूर पीटेगी।''

''वह सब बाद की बात है। पहले ये स्वादिष्ट पुए खाने दो।'' उस युवती ने लापरवाही से कहा।

- दयानंद -

''देखो, तुम्हारे पिता मनोहर रिश्ते में मेरे मामा हैं। मेरे माँ-बाप जब मर गये, तब मैं दस साल की उम्र का था। उस समय तुम छः साल की थी। तब मैं तुम्हारे ही घर में रहता था और तुम्हारे पिता ही मेरी देखभाल करते थे। तुम्हारी सौतेली माँ ने दो-तीन बार मुझपर चोरी का आरोप लगाया। तुम्हारे पिता ने उस समय मुझे खूब पीटा भी। आख़िर मुझे घर से निकाल भी दिया। तब से लेकर मैं मज़दूरी कर रहा हूँ और अपना पेट भर रहा हूँ। जहाँ जगह मिली, सो जाता हूँ। याद आया, तुम्हारा नाम सुनीता है न?''

उसने ''हाँ'' कहा और बलराम को एक बार ग़ौर से देखकर वहाँ से चली गयी।

सुनीता के चले जाने के बाद वह सोच में पड़ गया। उसे पुरानी बातें याद आने लगीं। जब उसके माँ-बाप ज़िन्दा थे तब वे उससे कहा करते थे कि सुनीता तुम्हारी पत्नी है। इस पर मनोहर और उसकी पहली पत्नी ठठाकर हँस पड़ते थे।

परंतु उसकी दूसरी पत्नी के आ जाने के बाद सब कुछ बदल गया। अब सौतेली माँ सुनीता को बहुत सताती है; घर का सारा काम कराती है और खाने को कुछ नहीं देती। बलराम मन ही मन सोचने लगा कि क्यों न मैं मामा से मिलूँ और सुनीता से अपनी शादी कराने को कहूँ। उन्हें मैं आश्वासन भी दूँगा कि उनकी खेती का और घर का काम भी संभालूँगा और उनकी बढ़ती उम्र में भरसक उनकी सहायता करूँगा। यह निश्चय कर सबेरे ही वह मामा मनोहर से मिलने गया। उस समय मनोहर घर के बाहर के चबूतरे पर बैठा हुआ था। उसकी पत्नी सुजाता दरवाज़े के पास ही बैठकर तरकारियाँ छील रही थी।

बलराम को देखते ही मनोहर पहले मुस्कुराया, पर दूसरे ही क्षण वह कटु स्वर में कहने लगा, ''मेरे घर क्यों आये? कोई काम हो तो गली में कहीं बात कर सकते हैं न?''

बिना घबराये बलराम ने कहा, ''मामाजी, आप जानते ही हैं कि मेरा कोई अपना नहीं है। सुनीता के अलावा आपका भी कोई अपना नहीं है। जैसा कि बचपन में तय हुआ था कि सुनीता मेरी पत्नी बनेगी, उससे मेरी शादी करा

दीजिए। आपकी, आपके खेत की और आपके घर की सारी जिम्मेदारियाँ मैं संभालूँगा। आपको और मौसी को सदा सुखी रखूँगा।''

इन बातों को सुनकर मनोहर हक्का-बक्का रह गया। उसे ग़ौर से देखते हुए उसने कहा, ''देखो बलराम, ये सब बहुत पुरानी बातें हैं, पुराने वादे हैं। तुम्हारे माँ-बाप के मर जाने के बाद अपने ही घर में रखकर तुम्हें योग्य बनाना चाहा। पर अपनी मौसी की नज़र में तुम एक चोर हो। उसकी बातें टालकर अपनी तरफ़ से मैं कुछ करने की स्थिति में नहीं हूँ।''

सुजाता ने उनकी यह बातचीत ध्यान से सुन ली। वह अपने को काबू में न रख सकी और बाहर आकर क्रोध-भरे स्वर में फटकारती हुई कहने लगी। ''ऐ छोकरे, तुम निकम्मे हो, चोर हो, हम पर प्रेम का नाटक मत करो। सुनीता की शादी किससे और कब करनी है, उसके माँ-बाप को अच्छी तरह से मालूम है। फिर कभी शादी की बात लेकर मेरे दरवाज़े पर आये तो तुम्हारे हाथ-पाँव तोड़ दूँगी। चला जा, यहाँ से अभी।'' यों चिल्लाती हुई वह जोश में आ गयी, उसके हाथ पाँव काँपने लगे और धड़ाम से ज़मीन पर गिर गयी।

मनोहर और सौतेली माँ की चिल्लाहटें सुनकर पिछवाड़े के कुएँ के पास कपड़े धोती हुई सुनीता दौड़ी-दौड़ी आयी। उसकी समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए। बलराम तुरंत गाँव के वैद्य भद्राचारी को ले आया। उसने

सुनीता को तरह-तरह के पत्तों का रस पिलाया और आख़िर उसे होश में ले आने में कामयाब हुआ। फिर कहा, ''देखो सुजाता, पहले ही मैं कई बार तुमसे कह चुका हूँ। तुम अति रक्त-चाप से पीड़ित हो। हर छोटी-छोटी बात पर तुम अनावश्यक ही उत्तेजित हो जाती हो। अगर तुम ज़िन्दा रहना चाहती हो तो तुम्हें तीन महीनों तक पूरा विश्राम करना होगा। साथ ही, सबेरे और शामको सर्पगंधा की लताओं के कोमल पत्तों के निचोडे हुए रस को पीना होगा। सर्पगंधा की ये लताएँ हमारे गाँव के पश्चिमी भाग के राणा पहाड़ पर प्रचुर मात्रा में मिलेंगी। हर रोज ये पत्ते मंगाना, उनका रस निचोड़ना और पी जाना। इसका इंतज़ाम कर लेना और अपनी उत्तेजना पर काबू रखना।''

वैद्य भद्राचारी के चले जाने के बाद सुजाता ने बड़े ही दीन स्वर में सुनीता से कहा, ''यह मत समझना कि मैं वेदांत बोल रही हूँ या बैरागी के तत्व सुना रही हूँ। सुनीता, जब तक मनुष्य स्वस्थ रहता है, तब तक साथ में रह रहे दूसरे मनुष्य की आवश्यकता को महसूस नहीं करता। मुझे तुम्हें प्यार से पालना-पोसना था, पर मैंने ऐसा नहीं किया। सौतेली माँ की तरह तुम्हें सताया। उसी पाप का दंड अब भुगत रही हूँ। अच्छी तरह से मेरी देखभाल करने की विनती भी नहीं कर सकती। मुझे भुगतने दो, अपने पापों की सज़ा।''

उसकी बातों पर सुनीता का दिल करुणार्द्र हो गया और उसने कहा, ''मौसी, तुमने गालियाँ दीं, पीटा, तुम पर कभी-कभी नाराज़ हो उठती थी, पर तुम्हें सदा अपनी माँ ही समझा। बहुत ही जल्दी तुम चंगी हो जाओगी। हर तरह से मैं तुम्हारी सेवा करूँगी।''

मनोहर यह दृश्य चुपचाप देखता जा रहा था। तब बलराम ने दखल देते हुए कहा, ''मौसी, चिंता की कोई बात नहीं। हर रोज़ मैं सर्पगंधा की लताएँ ले आऊँगा और चला जाऊँगा। बस, वचन देना कि मेरे घर आने पर उत्तेजित नहीं होंगी।''

सुजाता कुछ कहने ही वाली थी, तभी मनोहर ने कह दिया, ''अपनों का प्रेम आपदा में ही प्रकट होता है। इसे ही खून का रिश्ता कहते हैं। चूँकि मैं इसका मामा हूँ, इसीलिए तुम्हें अपनी मामी मानकर यह रोज़ सर्पगंधा की लताओं को लाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले रहा है। समझ गयीं?''

सुजाता कुछ और कह न पायी। काँपते हुए हाथों से अपने आँसुओं को पोंछने लगी। फिर थोड़े ही दिनों में सुनीता और बलराम की सेवाओं के फलस्वरूप सुजाता का स्वास्थ्य ठीक हो गया।

छः महीनों के अंदर ही उसने उन दोनों की शादी करा दी। पति से सलाह-मशविरा करने के बाद वह बलराम को घर जमाई बनाकर अपने घर ले आयी।

सियार की चाल-बाघ की पछाड़

एक जंगल में एक सियार और एक भेड़िये की मुलाक़ात हुई। दोनों आपस में बातें करने लगे।

बातचीत में भेड़िये ने अचानक सियार से पूछा, ''अब बेसिरपैर की ये बातें रहने दो। बताना, कहाँ तक तुम्हारी पढ़ाई हुई?''

''यह सच है कि मेरी पूरी पढ़ाई-लिखाई नहीं हुई।'' सियार ने कहा। ''देखो, तुमसे मैं ज़्यादा पढ़ा लिखा हूँ। आगे से ''अजी'' कहकर आदरसहित मुझे संबोधित करना। समझ गये?'' भेड़िये ने अपना बड़प्पन जताते हुए कहा।

तब ठीक उसी वक़्त गरजता हुआ एक बाघ झाड़ियों के पीछे से उनके सामने आ पहुँचा।

तब सियार ने विनयपूर्वक भेड़िये से कहा, ''अजी, अब हम क्या करें?'' बाघ को देखते ही भेड़िया थरथर काँपने लगा और वह कोई जबाब देने की हालत में नहीं था।

बाघ उनपर लपकने के लिए तैयार था। उसने अपनी पूँछ को इधर-उधर हिलाते हुए कहा, ''तुम दोनों भागने की साजिश कर रहे हो क्या? मुझसे बचना नामुमकिन है।''

सियार ने तुरंत कहा, ''मालिक, हम आप ही के दर्शन करने निकले थे। सौभाग्य की बात यह है कि आप ही हमारे सामने आ गये। हम एक जटिल समस्या में फंसे हुए हैं। आप अति शिक्षित हैं, आपका ज्ञान अपार है। हमारा विश्वास है कि इस समस्या का परिष्कार आपके सिवा कोई और नहीं कर सकता।''

बाघ को, सियार की प्रशंसा बहुत अच्छी लगी। वह बेहद खुश हुआ। आराम से पीछे के पैरों पर झुककर बैठते हुए उसने पूछा, ''बोलो, वह जटिल समस्या है क्या?''

सियार ने विनयपूर्वक सिर झुकाते हुए कहा, ''मालिक, बड़े ही साहस के साथ पूरे

- मुकुंद गर्गी -

जंगल में घूमता हुआ अपनी जान पर खेलकर मैंने दो खरगोशों का शिकार किया और अपने साथ ले आया। पर इस भेड़िये का दावा है कि चूँकि वह मुझसे अधिक पढ़ा-लिखा है, इसलिए उन दो खरगोशों में से एक उसका होगा। परंतु मुझे उसका दावा न्यायसंगत नहीं लगता। उसे एक खरगोश भी सौंपने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ।''

सियार की बातें सुनने के बाद बाघ ने भेडिये को नख से शिख तक देखा और कहा, ''पहले तुम्हें यह बताना पड़ेगा कि तुमने कहाँ तक शिक्षा पायी?''

डर के मारे भेड़िया थरथर काँपने लगा और उसके मुँह से बात भी निकल नहीं पा रही थी, तब सियार ने आगे आकर कहा, ''मालिक, वह बताना चाहता है कि उसके मुँह में जितने दांत हैं, उतनी विद्याएँ उसने सीखीं।''

''यह बात है! ऐसी बात है तो मैं तुम दोनों से अधिक पढ़ा-लिखा हूँ।'' कहते हुए बाघ ने अपना भयंकर मुँह खोला और अपने पैने दांत दिखाये। उसके पैने दाँतों को देखते हुए भेडिया थरथर काँपने लगा और देखते-देखते वह बेहोश हो गया। बाघ ने इस पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''यह क्या?''

''मालिक, इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। शिक्षा में आपकी महानता को स्वीकार करते हुए वह आपके पैने दाँतों को प्रणाम कर रहा है। आपने अप्रत्यक्ष रूप से हमारी समस्या

का परिष्कार भी कर दिया। कृपा करके आप हमारे घर पधारें तो उन दोनों खरगोशों को आपके सुपुर्द कर दूँगा।''

बाघ खुशी के मारे फूल उठा। उसने मन ही मन सोचा कि दोनों खरगोशों को पहले खा लूँगा और फिर इन दोनों को भी खा जाऊँगा।

''ठीक है, आगे बढ़ो, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आऊँगा।'' यों कहते हुए वह खड़ा हो गया।

सियार, बाघ को पहाड़ियों के बीच के सुरंग मार्ग के पास ले गया और कहा, ''मालिक, हम यहीं रहेंगे। भेडिया सुरंग मार्ग से होता हुआ जायेगा और उन खरगोशों को ले आयेगा।''

''ठीक है, जल्दी जाने को कहो। पेट में चूहे दौड़ रहे हैं,'' जंभाई लेते हुए बाघ ने कहा।

सियार ने जो सुरंग मार्ग दिखाया, वह बड़ा ही तंग था। पर बाघ से बचने के लिए भेडिये को उसमें से आगे बढ़ना ही पड़ा।

परंतु, बहुत समय बीत जाने के बाद भी जब भेड़िया वापस नहीं आया, तब सियार ने बाघ से कहा, ''मालिक, अगर आपकी अनुमति हो तो मैं सुरंग में जाकर देखूँ कि आख़िर भेडिया वहाँ कर क्या रहा है?''

''ठीक है, तुम्हें इसकी अनुमति देता हूँ। तुम दोनों उन खरगोशों को लेकर तुरंत लौटो।'' बाघ ने कहा।

समय बीतता गया, पर सियार और भेडिये के लौटने का कोई संकेत नहीं मिला। बाघ नाराज़ हो उठा और उसने अपना सिर उस सुरंग में घुसाने की कोशिश की। उस कोशिश में नाकामयाब होकर गालियाँ देता हुआ वहाँ से निकल गया।

थोड़ी देर बाद सियार और भेडिया इस निश्चय पर पहुँच गये कि बाघ वहाँ से चला गया तो दोनों सुरंग से बाहर आ गये।

तब भेड़िये ने, सियार की तारीफ़ करते हुए कहा, ''तुम्हारी पढ़ाई मुझसे कम है, पर तुम्हारी अक़्ल कमाल की है। अपनी चालों से तुमने बाघ को चित कर दिया।''

सियार ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा, ''अजी सब आपकी कृपा है।''

अमीरी-गरीबी

एक गाँव में धनगुप्त नामक एक व्यापारी था। उसने ज़िंदगी भर कमाकर अपार संपत्ति जोड़ ली। बुढ़ापे में लकवा मार गया तो उसने खाट पकड़ ली। तब वह पछताने लगा, ''मेरी सारी ज़िंदगी केवल धन जोड़ने में ही व्यतीत हो गई। मैं अपनी कमाई के द्वारा लोगों के काम में आनेवाला कोई उपकार नहीं कर पाया।''

यों सोचकर उसने अपने पुत्र श्रीगुप्त को निकट बुलाकर समझाया, ''बेटा, मैं अपनी ज़िंदगी में जनता के उपयोग का एक भी काम कर न पाया। न किसी गरीब-दुखिया अथवा असहाय व्यक्ति की मदद की। तुम अपनी ज़रूरतों के लिए आवश्यक धन रखकर बचे हुए धन से एक धर्मशाला बनवा दो।'' यों कहकर धनगुप्त ने सदा के लिए अपनी आँखें मूँद लीं।

अपने पिता की अत्येष्ठि समाप्त करने के बाद श्रीगुप्त व्यापार में निमग्न हो गया। उस वर्ष व्यापार में उसे आशा से अधिक लाभ हुआ। उसे अपने पिता की बातें याद आ गईं।

श्रीगुप्त ने सोचा, '' हो सकता है कि व्यापार में अगले साल नुक़सान हो जाये ! अगले वर्ष भी ज्यादा लाभ हो तो मैं धर्मशाला अवश्य बनवा दूँगा; वरना बेकार यह धन खर्च क्यों करूँ?''

दूसरे साल भी उसे दुगुना लाभ हुआ। फिर भी उसे उस धन से संतोष नहीं हुआ। उसने धर्मशाला बनाने की बात फिर टाल दी।

एक दिन रात को श्रीगुप्त बड़ी देर तक अपना हिसाब-किताब देखते जागता रहा। उस समय कोई पीड़ा के मारे कराहते हुए आकर उसके घर के सामने के चबूतरे पर बैठा। श्रीगुप्त ने खिड़की में से झांक कर बाहर देखा। एक बूढ़ा, पर अंधा भिखारी पीड़ा के मारे कराहते हुए

चबूतरे पर बैठे अपनी झोली और बरतन को टटोल रहा था।

इतने में एक और भिखारी लंगड़ाते हुए चबूतरे के पास आया और पूछा, ''जगत, कराहते क्यों हो? क्या हुआ तुम्हें?''

जगत ने पीड़ा के मारे कहा, ''अरे नारायण, तुम हो? मैं तो अंधा ठहरा! सुबह भीख माँगने निकला तो पैर सूझ गया। इसलिए मैं कहीं जा न सका। आज मुट्ठी भर दाने भी हाथ न लगे। एक ओर पैर दुख रहा है तो दूसरी ओर भूख सता रही है। मैं अपनी हालत क्या बताऊँ?''

नारायण ने जगत के पैर की ओर देखा। वह ख़ूब फूला हुआ था। नारायण ने अपनी झोली में से बर्तन निकालते हुए कहा, ''मैं तुम्हारे पैर की पीड़ा को तो दूर नहीं कर सकता। लेकिन तुम्हारी भूख मिटा सकता हूँ।'' यों कहते नारायण ने अंधे की ओर बर्तन बढ़ाया।

''तुमने भी कुछ खाया या पूरा खाना मुझको ही दे रहे हो?'' जगत ने आश्चर्य में आकर पूछा।

''दोनों में बराबर-बराबर बाँट लिया है। मैंने अपना हिस्सा ले लिया है।'' नारायण ने दो मुट्ठी बूढ़े के बर्तन में डालते हुए जवाब दिया।

इस दृश्य को खिड़की में से देखनेवाले श्रीगुप्त की आँखें खुल गईं। उसके भीतर जैसे उसकी आत्मा बोल पड़ी, अपने पास जो कुछ है, उसे बाँटकर देनेवाली संपत्ति नारायण की असली अमीरी है। पर किसी को भी कुछ न दे सकनेवाली जगत की स्थिति गरीबी की है। मैं धनी होते हुए भी गरीब हूँ।

इसके बाद श्रीगुप्त ने उस रात को उन दोनों भिखारियों को अपने घर में भर पेट खाना खिलाकर आश्रय दिया। दूसरे दिन सबेरे जगत के पैर का इलाज करवाया और उसी दिन धर्मशाला बनाने का काम शुरू कर दिया।

उसने अमीरी और गरीबी का सच्चा मर्म समझ लिया और तब से धन कमाने के साथ-साथ उसे परोपकार के कार्य में लगा कर उसका सदुपयोग भी करने लगा।

जयानन्द और शिष्य रामू की भेंट एक बच्चे और एक बेहोश औरत से हो जाती है। होश में आने पर औरत बच्चे पर एक नज़र डालती है और प्राण छोड़ देती है। उसकी आत्मा ऋषि के सामने प्रकट होती है। वह शान्तिपुर की रानी थी। शिष्य गोविन्द उन्हें बताता है कि राज्य में हलचल है और राजा गायब है।
6
आर्य
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अय्या
इसे और गहरा करो, रामू।
और गोविन्द, दीवारों में पत्थर के टुकड़ों का अस्तर लगा दो।
जयानन्द के निर्देशन में उसके शिष्य शान्ता-कुमारी के शरीर को दफनाने के लिए एक गड्ढा तैयार करते हैं।
आओ वत्स, उस श्वेत पुष्प को अपनी माँ के ऊपर रखो तथा उनके चरण-स्पर्श करो।
दो अन्य शिष्य साथ देते हैं और उनकी सहायता से वे शरीर को नीचे उतारते हैं।
लकड़ी के कुन्दों और तख्तों पर मिट्टी का एक टीला बनाओ। शरीर को नष्ट नहीं होना चाहिए।

बाघा, बाघी ! इस स्थान पर पहरा देने के लिए तुममें से एक को हमेशा रहना चाहिए, जब तक मैं मना न करूँ।
आओ, आश्रम में लौट चलें। और विचार करें कि बच्चे की देखभाल कैसे कर सकते हैं।
राजधानी में, राजकुमार के जन्म दिवस समारोह के अचानक समाप्त हो जाने के कारण जनता में अशान्ति है।
सब लोग ध्यान से सुनो ! हमारे राज्य पर संकट आ गया है। कुछ दुष्ट शक्तियों का इसमें हाथ है। राजा, रानी और राजकुमार का कहीं पता नहीं है।
सेनापति वीर सिंह प्रभारी शासक होंगे।
राजा कहाँ हैं? यह जानना हमारा अधिकार है !
यह तुम्हारा काम नहीं है। तुम सब लोग अपने-अपने घर लौट जाओ।
खुशियों से भरी रात के बाद दुखद समाचार
कोई विचार-विमर्श नहीं ! मेरी बात सुनो !
भविष्य में क्या अब हम लोगों को शान्ति मिल पायेगी?
मैंने तुम्हें चुप रहने के लिए कहा है!
रक्षक ! इसे ले जाओ।

क्या आपने मुझे बुलाया?
हाँ, आचार्य, यह मेरे राज्याभिषेक के विषय में है।
इस महान आयोजन के लिए तिथि निश्चित कीजिए।
लेकिन राज्याभिषेक तो तभी हो सकता है...
...जब हम निश्चित रूप से जान लें कि राजा अब नहीं रहे।
रक्षक, इसे कारागार में डाल दो।
दरबार में सेनापति मंत्री को संबोधित करता है।
मानवेन्द्र, मैं हमेशा के लिए प्रभारी शासक नहीं बना रह सकता। आपको मेरे राज्याभिषेक का आयोजन अवश्य करना चाहिए।
लेकिन सेनापति, क्या हमलोगों को कुछ दिन और प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, जब तक...
आपको मुझे अभी तक सेनापति कहकर संबोधित करने की हिम्मत कैसे हुई? क्या आपको नहीं मालूम है कि वास्तविक राजा मैं हूँ?
राजा तो वही है, जो प्रजा को समृद्धि दे और राज्य में शान्ति स्थापित करे। मुझे सन्देह है कि तुम ऐसा हो।
मैं आपके अधीन राज्य की सेवा नहीं करना चाहता।
हा, हा! अच्छा हुआ, मुक्ति मिली!

यदि कोई और उसके पीछे जाना चाहता है तो जा सकता है।
दरबार में वीर सिंह लगभग अकेला रह गया है।
मानवेन्द्र और दिनों की तरह पूजा के लिए शिव मंदिर में जाते हैं।
लौटते समय इनके अनजाने में तीन व्यक्ति इनकी घात में थे।
उन्होंने देखा कि बिजली की गति से उन तीनों पर एक तलवार ने वार किया। तीनों मृत हो गये।
आप?
बोलो मत ! अमृतपुर चले जाओ। और जल्दी !
क्रमशः

इन पर उछाल दो रंग

ये दोनों विरले मित्र बड़ा मजा ले रहे हैं। क्या शामिल होना चाहते हो? फिर तो बस अपने रंग निकालो और उन पर उछाल दो।
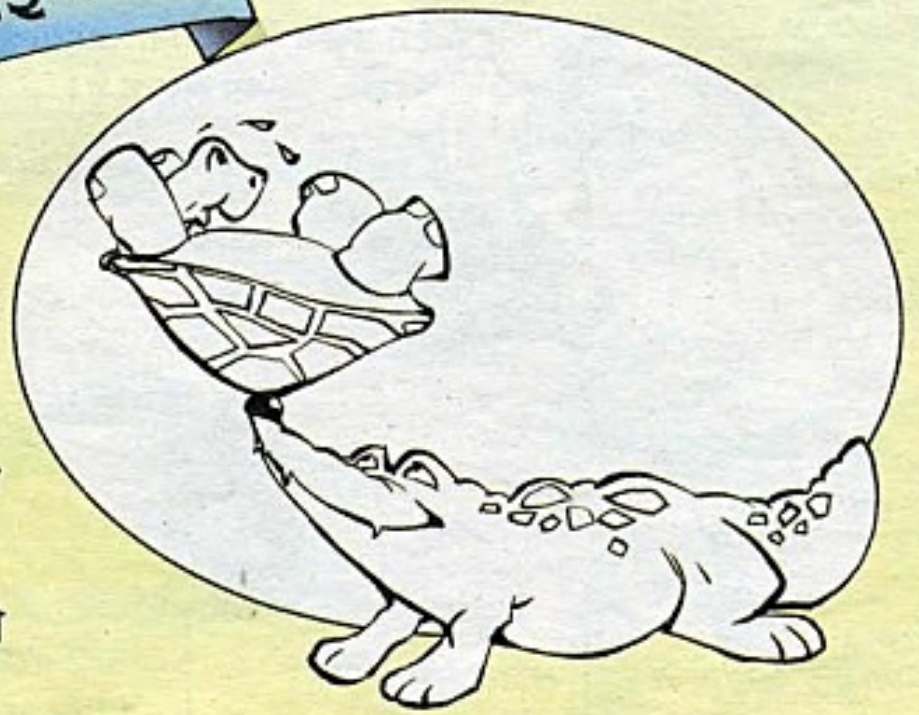
अनुमान करो, क्या?

भोला अपना शिकार लेकर घर जा रहा है। दायीं तरफ दिये गये तीन टुकड़ों में से एक को चुनो और खाली जगह में रखकर मिलान करो और पता करो कि बोरी में कौन है? सावधानी से देखो कि भोला के शिकार में क्या कमी है?

क्या फ़र्क है?

ऊपर दिये गये दोनों चित्रों को ध्यानपूर्वक देखो और
खोज करो कि उनमें क्या अन्तर है?

(उत्तर - पृष्ठ ६६ पर)

चक्कर, चकित करनेवाला

शहद के पात्र तक पहुँचने में भीमकाय भालू
की मदद करो।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

MAHANTESH C. MORABAD
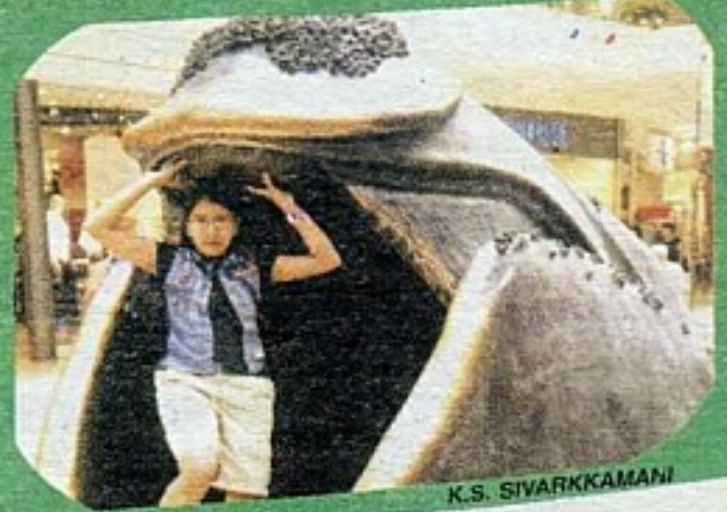
K.S. SIVARKKAMANI

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

अक्तूबर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

सोहन लाल अग्रवाल,
C/o. अग्रवाल हार्डवेयर स्टोर
पोस्ट - भवानी पटना, जिला - कालाहांडी,
पिन - ७६६ ००१.

विजयी प्रविष्टि

अमीरी की छांव में मुस्काता बचपन।
गरीबी में झांकता मासूम चितवन॥

मनोरंजन टाइम्स के उत्तर (पृष्ठ ६४-६५)

फ़र्क क्या है? : १. एक चिड़िया के सिर पर कम बाल है, २. एक चिड़िया की एक ही टांग है, ३. एक बड़ी मधुमक्खी में एक पंख गायब है, ४. एक छोटी मधुमक्खी में एक पंख गायब है, ५. एक चम्मच में शहद नहीं है, ६. बाल्टियों पर अलग-अलग रूपरेखाएँ हैं, ७. एक फूल में एक बाहरी पंखुड़ी गायब है, ८. एक मधुमक्खी की छाती में निशान नहीं है।

भोला : हिरण। हिरण की पूँछ नहीं है।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

Amul
food festival
Amul
FUNDOO
खाओ
पांडव
घर लाओ!
ऑफ़र
FUNDOO
बंपर प्राइज़
महा भारत दर्शन
स्टेप-1
अमूल फंडू ख़रीदो
और
पांडव स्टिकर्स मुफ़्त पाओ.
स्टेप-2
महाभारत
पाँचों पांडव और द्रौपदी स्टिकर का
सेट जमा करो और बदले में पाओ
5 महाभारत डायमंड
कॉमिक्स.
RCB+ULKA 310642 HIN
गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड.आणंद-388 001. हमें यहां मिलें : www.amul.com
*शर्तें लागू.

CHANDAMAMA (Hindi) DECEMBER
Regd. with Registrar of Newspaper for India No.
Registered No. TN/PMG
Licensed to post without
Foreign